इतिहास दिवाकर

त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

वर्ष ६ अंक १ चैत्र मास कलियुगाब्द ५११५ अप्रैल, २०१३

मार्गदर्शक :
डॉ० शिवाजी सिंह
चेतराम
इरविन खन्ना

सम्पादक :
डॉ० विद्या चन्द ठाकुर

सह सम्पादक
चेतराम गर्ग

सम्पादक मण्डल :
डॉ० रमेश शर्मा
डॉ०ओम प्रकाश शर्मा

टंकण एवं सज्जा :
अश्वनी कालिया

सम्पादकीय कार्यालय :
ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान,
नेरी, गांव—नेरी, डाकघर—खगल
जिला—हमीरपुर—१७७००१(हि०प्र०)
दूरभाष : ०१९७२—२०३०४४

मूल्यः
प्रति अंक —१५.०० रुपये
वार्षिक — ६०.०० रुपय
itihasdivakar@yahoo.com
chetramneri@gmail.com

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

नव संवत्सर

वर्ष प्रतिपदा	गुरु गोलवलकर	३

विवेकानन्दामृतम्

मन्त्र : ॐ : शब्द और ज्ञान	स्वामी विवेकानन्द	६

संवीक्षण

वेद लोक में राख्यौ गोई	डॉ० वेद प्रकाश अग्नि	११
संकल्प पाठ का विवेचनात्मक अध्ययन	डॉ० ओम दत्त सरोच	२३
पूर्वी राजस्थान में बावड़ी एवं जल प्रबन्धन कला	डॉ० डी०सी० चौबे	२७
जम्मू का प्रजा परिषद् आन्दोलन	चौधरी चगर सिंह	३२

स्थान वृत्त

तीर्थ राज प्रयाग	डॉ० ओम कुमार दुबे	४०
प्रयाग में गंगा की तलाश	तरुण विजय	४४

सम्पादकीय

मंगलमय हो नव संवत्सर

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।।

सम्पूर्ण सृष्टि में सभी सुखी रहें, सभी रोग व्याधि से मुक्त रहें, किसी के भी भाग में कोई दुःख न आए और सभी सुख—सौभाग्यशाली कल्याण मार्ग का दर्शन एवं अनुसरण करें।

परम पुण्यप्रतापी ऋषि-मुनियों के इन आशीष वचनों के साथ नव संवत्सर कलियुगाब्द ५११५, विक्रमाब्द २०७० एवं शकाब्द १९३५, सब के लिए मंगलमय हो।

भारतीय सनातन सांस्कृतिक परम्परा में चान्द्र मास के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा जो वर्ष प्रतिपदा के नाम से प्रसिद्ध है, के दिन नव वर्ष—नव संवत्सर आरम्भ होता है। इस वर्ष नव संवत्सर का शुभारम्भ सूर्य सिद्धान्त पर आधारित सौर मास विक्रमी संवत् चैत्र मास के २९ प्रविष्टे एवं शक संवत् चैत्र मास के २१ प्रविष्टे तदनुसार ११ अप्रैल, २०१३ के दिन को है।

इसी उपलक्ष्य में भारत राष्ट्र के महान् तत्त्वदर्शी परम पूज्य माधवराव सदाशिवराव गुरु गोलवलकर जी का एक व्याख्यान लेख 'चैत्र शुक्ल प्रतिपदा — वर्ष प्रतिपदा' इस अंक का अग्र लेख है। इस लेख में गुरुजी का यह मार्गदर्शन अत्यन्त अनुकरणीय है — ***साधारणतः प्रत्येक मनुष्य सोचता है कि वह अपने जीवन का प्रत्येक पल उत्तम रीति से सत्कार्य में लगाएं, पर यह सब कृति (आचार-व्यवहार) में होता हुआ बहुत कम दिखाई देता है। विचार और कृति में कोई तालमेल नहीं है। हमें हमारे भाईयों की भलाई करनी चाहिए — ऐसी जागृति जहां-तहां दिखाई देती है, पर ये विचार इसलिए प्रकट किए जाते हैं कि इन उत्तम विचारों के अनुसार कोई अन्य व्यक्ति काम करे। उनके अनुसार स्वतः काम करने की प्रवृत्ति विचार प्रकट करने वालों में नहीं रहती। जहां कर्त्तव्य बोध नहीं, केवल उच्च-विचार ही है, उसे जागृति का नाम देना गलत होगा।***

गुरु गोलवलकर जी के मार्गदर्शन के अनुसार मानव मन, वचन और कर्म से विभक्त व्यक्तित्त्व वाला न हो कर एकमेव हो तो समाज, राष्ट्र एवं विश्व मंगल की आकांक्षा पूर्ति सुनिश्चित है।

विनीत

डॉ० विद्या चन्द ठाकुर

नव संवत्सर

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा : वर्ष प्रतिपदा

गुरु गोलवलकर

नूतन वर्ष के दिन बहुत से सज्जन आगामी वर्ष में कार्य करने की कुछ योजना बनाते हैं, बड़े अच्छे-अच्छे निश्चय किया करते हैं और समझते हैं कि उन निश्चयों को लेकर अपना नया वर्ष बिताएंगे। पर अधिकांश के विचार केवल विचार ही रह जाते हैं, कृति से उनका कोई सम्बन्ध नहीं रहता। मनुष्य जीवन बहुत छोटा है। अतएव जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ गंवाना अनुचित है। साधारणत: प्रत्येक मनुष्य सोचता है कि वह अपने जीवन का प्रत्येक पल उत्तम रीति से सत्कार्य में लगाए, पर यह सब कृति में होता हुआ बहुत कम दिखाई देता है।

नूतन वर्ष में प्रवेश करते समय मनुष्य आगामी वर्ष की सुखद कल्पना से आनंदित होता है। मन में नई-नई उमंगें उठती हैं। उसकी आयु एक वर्ष बढ़ गई है, इसका खोटा अभिमान भी होता है। लेकिन यह बात ध्यान में नहीं आती कि उसकी मृत्यु एक वर्ष समीप आ गई है। यथार्थ में इस दृष्टि को सामने रखते हुए बचा हुआ कार्य और भी अधिक शक्ति, गति तथा बुद्धि लगाकर करना चाहिए, जिससे वह अपनी पिछली कमी को पूरा कर आगे बढ़ सकें। परन्तु वह अपनी उमंग में यह भूल जाता है कि बीते हुए समय में उसने कुछ भी नहीं किया। उसे अपने ऊँचे विचारों और कार्य की विषमता का ज्ञान तक नहीं होता। यह बात केवल साधारण लोगों के जीवन और आचरण में ही नहीं, वरन् बड़े कहलानेवाले अनेक लोगों में भी मिलती है। ऊँचे से ऊँचा निश्चय करने के पश्चात् मनुष्य का कार्य साधारण ही रह जाता है, उसका जीवन यों ही बीत जाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रत्येक स्वयंसेवक को ध्यान में रखना चाहिए कि एक बार किए हुए विचार पर दृढ़ रहे और उसे अवश्य पूरा करे।

संघ ने अपने जीवन के प्रारंभिक काल से ही निश्चय किया हुआ है कि हमारे अंत:करण के ऊँचे विचार केवल अपने अन्तर्गत ही न रहें, उनका विकास अन्य लोगों में भी होना चाहिए। जब संघ की स्थापना हुई, तब की और हिन्दू समाज की अब की अवस्था में आज भी कोई विशेष अन्तर दिखाई नहीं देता। इसलिए हमारे कार्य और विचारों में भी फेरफार की कोई आवश्यकता नहीं है। हमने निश्चय किया हुआ है कि संघकार्य आजीवन करेंगे। स्वयंसेवक ऐसा विचार नहीं करता कि मैं केवल अमुक समय तक ही हिन्दू राष्ट्र की सेवा करूंगा और फिर विश्राम करूंगा।

तन-मन-धन पूर्वक आजीवन कार्य करने के अपने व्रत के विषय में कुछ लोगों का आक्षेप भी है। एक सज्जन कहने लगे कि यह तो बड़ा भारी बंधन है। मैं भी नहीं चाहता कि कोई मनुष्य बंधन में रहे। बंधनमुक्त होने से अच्छी दूसरी कोई बात हो ही नहीं सकती। पर प्रश्न यह है कि जब मनुष्य कहता है कि मैं बंधन में नहीं रहूंगा, तब क्या वह सचमुच में यह विचार हृदय से करता है?

यथार्थ में मनुष्य बंधन से मुक्ति नहीं चाहता, वह तो केवल समाज के बंधन से, समाज के प्रति उसके कर्त्तव्य से मुक्ति चाहता है। लेकिन वह भूल जाता है कि जब तक मनुष्य जीवित है, तब तक वह समाज से कदापि अलग नहीं हो सकता।

हिन्दू समाज व हिन्दू राष्ट्र की उन्नति करने की भाषा अनेक लोग बोलते हैं, परन्तु हमें देखना है कि उन्नति के विषय में उचित विचार किया जाता है अथवा नहीं, उस विचार के अनुरूप कृति भी होती है या नहीं? हमें ज्ञात होगा कि विचार और कृति में कोई ताल-मेल नहीं है। हमें हमारे भाइयों की भलाई करनी चाहिए – ऐसी जागृति जहां-तहां दिखाई जरूर देती है, पर वे विचार इसीलिए प्रकट किए जाते हैं कि उन उत्तम विचारों के अनुसार कोई अन्य व्यक्ति काम करे। उसके अनुसार स्वत: काम करने की प्रवृत्ति विचार प्रकट करनेवालों में नहीं रहती। परन्तु जहां कर्त्तव्यबोध नहीं, केवल उच्च विचार ही हैं, उसे 'जागृति' का नाम देना गलत होगा। यों तो मनुष्य स्वप्न में बड़े–बड़े महल बनाया करता है, कभी-कभी राजाधिराज भी बन जाता है, मगर इससे उसे वास्तविक लाभ कुछ नहीं होता। जागृत अवस्था में यदि वह किसी एक कुटिया का मालिक भी बन सके तो वह लाभ कहा जाएगा।

संघ कार्य में योगदान

आज इस मंगल प्रसंग पर हम अपने निश्चय को दोहराते हुए आगे बढ़ने का संकल्प करते हैं। पूजनीय डॉ. हेडगेवार जी ने कार्य की मर्यादा शहरों में तीन प्रतिशत और ग्रामों में एक प्रतिशत बतलाई थी। उस मर्यादा तक पहुंचने के लिए हमें कार्य करना है।

आज का दिन अपने लिए एक दूसरी दृष्टि से भी महत्व का है। संघ की कल्पना को मूर्त रूप देने वाले आद्य सरसंघचालक पूजनीय डॉ. हेडगेवार जी का जन्म आज के ही दिन हुआ था। ऐसे कई महात्मा और ईश्वरावतार, जो हमारी इस भूमि में हो चुके हैं, उनमें से अधिकांश के जन्मोत्सव हमारे समाज में मनाए जाते हैं, परन्तु इन त्योहारों को मनाते समय उन महापुरुषों के जीवन को आदर्श मानकर उसके अनुरूप अपना जीवन बिताने का निश्चय कितने लोग करते हैं?

पूजनीय डॉक्टर जी की जन्मतिथि मनाते हुए हम लोग इस संस्मरणीय प्रसंग पर जो कुछ विचार करते हैं और कहते हैं, उसे अक्षरश: अधिक तीव्रता से कृति में उतारें। कठिनाइयों पर ध्यान न देते हुए आगे बढ़ें और विश्रांति की कल्पना छोड़े। संघ-प्रवर्तक ने संघकार्य को विस्तार देने में कितना कष्ट झेला, किस प्रकार अपना खून-पसीना एक किया, उसका स्मरण करें। उस महापुरुष ने जिस महान कार्य को बीजरूप से विशाल वृक्ष बनाया, जिसके लिए उन्होंने भगीरथ प्रयत्न किया और अंत में अपने आपको उसी में मिलाया, उस महान यज्ञ में हम अपना-अपना पूर्ण योग दें।

संघकार्य केवल घर बैठे रहने और विचारमग्न रहने से नहीं होगा। हमें स्वत: परिश्रम करना होगा। जब आवश्यकता होगी, तब हमें बुला लिया जाएगा, इस प्रकार के पराएपन के भाव से विचार तथा निश्चय करने से कोई लाभ नहीं। लाभ तो संघकार्य से एकत्व होने में है, संघ कार्य को जीवन कार्य बनाने में है।

सम्पूर्ण शक्ति कार्य में लगाएं

संघकार्य में केवल एक मूलगामी सिद्धान्त सामने रखा गया है कि पराए लोग हमारे सहायक नहीं हो सकते। उनसे सहायता की अपेक्षा करना हमारे हित में नहीं है। प्रत्येक समाज को अपनी आवश्यकताएं स्वयं ही पूरी करनी पड़ती हैं। हम अपने समाज की उन्नति स्वत: करेंगे, उसकी कमजोरियों को दूर करेंगे। स्वाभिमानी पुरुष परकीय सहायता की याचना कर वैभव प्राप्त करने की अपेक्षा सूखी रोटी खाकर अपना जीवन व्यतीत करना अधिक अच्छा समझता है। हमारे पूजनीय नेता ने ये विचार समाज के सामने बड़ी तेजस्वी वाणी में रखे और हम लोग उन विचारों को समाज के सामने दुहराते हैं। इतिहास ने सिद्ध कर दिया है कि समाज की उन्नति के लिए संगठन ही एकमेव मार्ग है। इस बारे में कोई संदेह न रखते हुए आगे बढ़ने में ही पुरुषार्थ है।

हम आज की विकट परिस्थिति से अनभिज्ञ नहीं हैं। परन्तु हमारा मार्ग निश्चित है और उस पर चलने का हमें अभ्यास भी है। हमें अपनी सारी अन्य बातों को स्थगित कर, अपनी सम्पूर्ण शक्ति संघकार्य में लगानी चाहिए। चाहे जितना भी कष्ट क्यों न हो हमें संघकार्य को अवश्यमेव आगे बढ़ाना है।

शरीर नश्वर है, अत: शरीर सुख की लालसा करना व्यर्थ है। कंजूस के समान अपने शरीर का संरक्षण करना किसी काम का नहीं। कंजूस सम्पत्ति संचय इस आशा से करता है कि आगे काम आएगी। अंत में सम्पत्ति छोड़कर मर जाता है। उसका उपयोग वह स्वयं नहीं कर पाता। इस प्रकार का जीवन किस काम का?

इच्छा होने पर भी इस संसार में कोई चिरंजीव नहीं रह सकता। अतएव यह शरीर सत्कार्य में लगे, इसमें ही उसका साफल्य है। शरीर का उपयोग चिता पर जलने में नहीं, वरन् उसका महत्त्व समाज हित में कार्य करने, उसके लिए अपने आपको क्रमश: जलाने में है। एक अंग्रेज कवि ने कहा है —

It is not growing like a tree
In bulk doth make Man better be
Or standing long an oak, three hundred year,
To fall a log at last, dry, bald and sere,
A lily of a day
Is fairer far in May
Although it fall and die that night,
It was the plant and flower of light.
In small proportions we just beauties see,
And in short measures life may perfect be.

(वृक्ष के समान भारी-भरकम बढ़ने से या तीन सौ वर्षों तक जीने के बाद अंत में शुष्क, पर्णहीन और म्लान होनेवाले ओक के वृक्ष के समान जीवन बिताने से मानव श्रेष्ठ नहीं बनता। लिली का फूल मई में एक दिन के लिए खिलकर शाम को झर जाता है। फिर भी उस पौधे और पुष्प

का जीवन उज्ज्वल है। हम छोटे से विस्तार में भी सौंदर्य की झलक पाते हैं। अल्पायु में भी जीवन सार्थक हो सकता है।)

डॉक्टर जी का ऐसा जीवन अपने सामने है। वहीं हमारा आदर्श है। हम अपने शरीर, बुद्धि, धन की ओर दुर्लक्ष्य कर आज के दिन यह निश्चय करें कि हम अपने पूजनीय नेता डॉक्टर जी के जीवन के अनुसार जीवन बिताएंगे।

संकट काल में परख

संघ पर प्रतिबंध लगने के पश्चात् दो वर्ष प्रतिपदा का यह पवित्र एवं श्रेष्ठ दिन कारागृह में व्यतीत करना पड़ा। अपने दिन-प्रतिदिन के कार्य से निवृत्त होकर कारावास के सौख्य का लाभ और अनुभव हमारे में से अनेकों को लेना पड़ा। परन्तु अच्छे बुरे कैसे भी दिन हों, वे आते हैं और जाते हैं। ऐसी रात नहीं, जो व्यतीत होकर सूर्योदय न हो। वैसे ही वे दिन भी बीते। संकटों का सहवास मिला। जो संकट चले गए, उन्होंने कुछ सीख भी दी। अपनी दृष्टि से यह सीख महत्त्वपूर्ण रही। संघ का स्वयंसेवक चारों ओर होनेवाली घटनाएं देखता है, उस पर विचार करता है। अपने कार्य के अधिष्ठान-स्वरूप जो प्रणाली हमने मानी है, वह कितने महत्त्व की, उपयुक्त है या उसमें कितना और क्या न्यून है, उसे वह परख पाता है।

पिछले दो वर्षों में अपने देश में जो भिन्न-भिन्न घटनाएं हुईं, उनपर विचार करें तो कहना होगा कि अपने इस अति प्राचीन राष्ट्र ने आज तक अपना चिरंजीवित्व कायम रखा। प्राचीन परम्परा की महान धारा अक्षुण्ण रखी। परन्तु अब इस राष्ट्र में कुछ ऐसी विचित्र भावनाओं एवं विचारों को स्थान मिला है कि वह धारा पुन: वेगवान, चैतन्ययुक्त करने के प्रयास किए बगैर इस राष्ट्र को उन्नति का मार्ग दिखाई नहीं देगा। इस राष्ट्र की उन्नति के लिए उसमें प्रवेश कर गए दोष प्रयत्नपूर्वक दूर करना, यही अपरिहार्य उपाय है।

राष्ट्रीय चरित्र का महत्व

समाज में व्याप्त दोषों का विचार करने पर अपने को अनेक दोष दिखाई देंगे। उनकी सूची बनाने बैठे तो एक लम्बी सूची बनेगी। पर मैं एक ही बात आपके सम्मुख रखता हूँ। उसमें दो प्रकार की कल्पनाओं का अंतर्भाव है। अपना आज का समाज जीवन राष्ट्रीय चरित्र से समृद्ध नहीं है। इसका अर्थ यही है कि राष्ट्रीय चारित्र्य की महत्ता और व्यक्ति जीवन के स्वार्थ से अधिक महत्व राष्ट्रसेवा को देने की भावना प्रकट नहीं होती।

राष्ट्रीय चरित्र सम्पन्न अंत:करण में ही ऐसा भाव निर्माण होता है कि हम इस महान राष्ट्रपुरुष के अंगप्रत्यंग हैं। इन अंगों से युक्त राष्ट्रीय चरित्र का परिपोष राष्ट्र जीवन में नहीं हुआ तो इस राष्ट्र के सम्मान की आशा नहीं कर सकते। इतना प्राचीन देश, यहां इतना बुद्धिमान तथा विविध गुणसम्पन्न विद्वान समाज है, पर दुनिया में उसे आज सम्मान नहीं है। वह सबके उपहास का विषय बना हुआ है। फिर भी उस राष्ट्रीय चरित्र की निर्मिति और राष्ट्र के आवश्यक जीवनतत्त्व के प्रति उसकी भावना दुर्लक्ष्य है।

आत्मविश्वास चाहिए

भेड़िये और कुत्ते की एक छोटी सी कथा है। एक पालतू कुत्ते का सारी आवश्यकताओं और विलासिता से पूर्ण भरा-पूरा जीवन देखकर भेड़िये के मन में वैसा ही जीवन जीने की इच्छा उत्पन्न हुई। उसने कुत्ते से इस बारे में बात की। बात करते समय उसका ध्यान कुत्ते के गले में पड़े पट्टे पर गया। उसने कुत्ते से इस बारे में पूछा। कुत्ते ने बताया कि मेरा मालिक कभी-कभी मुझे इससे बांधकर रखता है। यह सुनते ही भेड़िये का विचार बदल गया और उसे कुत्ते के सुखी जीवन के प्रति तिरस्कार उत्पन्न हुआ। वह यह कहकर जंगल में चला गया कि जंगल में स्वच्छंद घूमूंगा, खाने के लिए नहीं मिला तो वहीं मरूंगा, पर गले में पट्टा नहीं चाहिए। ऐसा लगता है कि Freedom from wants के लिए चीखनेवालों में उस भेड़िये से भी कम बुद्धिमत्ता है।

राष्ट्र के चरित्र में स्तर को उन्नत करने के लिए इसी तेजस्वी वृत्ति की आवश्यकता है। जीवन भले ही नष्ट हो पर यहीं लालसा रहे कि अपनी सारी शक्ति, प्रतिष्ठा, बुद्धि, सम्पत्ति राष्ट्र की स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु और उन्नति के लिए न्योछावर करेंगे। प्रत्येक अंत:करण में यह तेजस्वी प्रवृत्ति एक अमिट संस्कार, इस नाते से निर्माण करना, उसे संगठन के सूत्र में गूंथकर एक महान राष्ट्रव्यापी सामर्थ्य का निर्माण करना है।

कई लोगों को लगता है कि समाज संघकार्य समझ नहीं सकेगा। पर अपना कार्य समझने की योग्यता समाज में नहीं होती, तो यह कार्य बढ़ता नहीं, इसे लोकमान्यता नहीं मिलती। हम स्पष्ट अनुभव करते हैं कि एक व्यक्ति द्वारा प्रारम्भ किया गया कार्य सर्वत्र फैला। अपने समाज में कुछ परिवर्तन हुआ है या समाज की बुद्धि कुछ बदल गई है, ऐसी तो कोई बात है नहीं। परिस्थिति वही है, समाज भी वही है। लोग टीका टिप्पणी करते हुए दोष निकालने का प्रयत्न जैसा पहले करते थे, आज भी करते हैं। मैं तो यही कहूंगा कि अपना स्वयं पर से ही विश्वास घटा है, इसी कारण ऐसी बातें की जाती हैं।

चारों ओर भांति-भांति के विचारों का शोर है। दलों की भरमार है। छोटे-छोटे गुट सक्रिय हैं। इन सभी का शोर मिलकर भारी कोलाहल सुनाई देता है। इसलिए ऐसा लगता होगा कि हम अपनी पद्धति के कार्य नहीं कर पाएंगे, लेकिन यह विचार योग्य नहीं। बाहर कितना भी कोलाहल हो, सफलता केवल अपने को ही मिलेगी, केवल आत्मविश्वास चाहिए। अभी तक आत्मविश्वास से कार्य करने के कारण ही कार्य हुआ है। अत: वह हो नहीं सकता, यह कहना उचित नहीं।

आत्मविश्वासपूर्ण शब्दों का सामर्थ्य

आत्मविश्वासपूर्वक उच्चारित शब्दों में क्या सामर्थ्य होता है इसकी एक घटना स्मरण आती है। एक बैठक में विद्वान, सुशिक्षित लोग उपस्थित थे। बैठक में सर्वसाधारण पद्धति के अनुसार संघ की विचार-प्रणाली रखी गई। जब कहा गया कि हिन्दुस्तान, हिन्दुओं का देश है, इस देश की जिम्मेदारी सर्वथा हिन्दुओं पर ही है, तब उपस्थित लोगों में से कुछ को भारी धक्का लगा।

हिन्दू कहा जाने पर उन्हें मरणप्राय दु:ख हुआ। अपने समाज में कोई और गुण हो या न हो, वाकपटुता का गुण बहुलता से है। वितंडावाद की प्रवृति का शिकार होकर उन लोगों ने बैठक में भान्ति-भान्ति के संदेह प्रकट किए। यथासंभव, शान्ति से उन्हें उत्तर देने का प्रयत्न भी किया गया, पर वे कोई बात मानने को तैयार ही नहीं थे। कई लोगों को सामने वाले की किसी बात को न मानने में ही समाधान मिलता है। बौद्धिक कसरत में वे माहिर होते हैं। एक सज्जन ने जोश में कहा – 'कौन कहता है, हिन्दुस्तान हिन्दुओं का है?' उनके इस प्रश्न पर अपने डॉक्टर जी ने आत्मविश्वासपूर्वक कहा – 'मैं केशव बलिराम हेडगेवार कहता हूँ।' उनकी वाणी की पराकाष्ठा की प्रखरता से प्रश्नकर्त्ता चुप हो गया और सारा वितंडावाद वहीं समाप्त हो गया।

उस प्रतिकूल परिस्थिति में जो आत्मविश्वास कार्यवृद्धि में समर्थ रहा, क्या वह आज प्रभावी नहीं होगा? आत्मविश्वास के बल पर ही कार्य पूरे होते हैं। उसके अभाव में कार्य नहीं हो पाते। भले ही लोग आज न मानें, उसकी नाराजगी नहीं, शोक भी नहीं, पर अपने अहर्निश प्रयत्नों से उन्हें सत्य का दर्शन कराएंगे, उनसे स्वीकृत कराएंगे, इसी आत्मविश्वास से काम होगा, अन्यथा नहीं।

आत्मार्पण से सफलता

कई लोगों को कार्य पूर्ण होने की, इधर-उधर भागने की जल्दी होती है। वे सोचते हैं कि चारों ओर आतंक है, ऐसी स्थिति में हम दक्ष आरम क्यों करते रहें? इस पद्धति से काम करना उन्हें नीरस लगता है, उकताहट होती है। डाक्टर जी ने जिस काम में अपना पूरा जीवन लगा दिया, जिसका दिन-रात चिंतन किया। किसी भी प्रकार का परिश्रम करने से वे पीछे नहीं हटे। हृदय में ज्वालामुखी समान आग धारण कर कार्य किया। अपना आत्मविश्वास कभी घटने नहीं दिया। उसी प्रखर आत्मविश्वास से आत्मार्पण कर हमने कार्य किया तो सफलता मिलनी ही चाहिए। सब कुछ ठीक है, केवल आत्मविश्वासपूर्वक कार्य करनेवाले, आत्मार्पण करनेवालों की संख्या पर्याप्त नहीं है। इसे समझ लें और एकसूत्र, एकात्मभाव, एक हृदय के अनुशासित लाखों लोग जमा करें। हृदय की एकता समाविष्ट कर समष्टिरूप हृदय का निर्माण करें। उसी में सभी संदेहों का उत्तर है।

आज तक के आग्रहपूर्वक किए गए प्रयत्नों से परिस्थिति में कुछ अनुकूल परिवर्तन हम देख पाए हैं। जहां हिन्दू कहलाने में लज्ला अनुभव होती थी, वहीं अब ऐसे लोग मिलते हैं जो हिन्दू कहलाने में आनंद, प्रेम अभिमान मानते हैं। हम व्यर्थ के संदेह छोड़ कर, सम्पूर्ण शक्ति के कार्य करें, यह भूमि पुन: एक बार दुनिया में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कर सकेगी, अन्यथा क्या होगा, यह हमारे सामने है ही।

विवेकानन्दामृतम्

मंत्र : ॐ : शब्द और ज्ञान

स्वामी विवेकानन्द

सिद्ध गुरुओं को आध्यात्मिक ज्ञान का बीज शिष्य में शब्दों (मन्त्र) के द्वारा संप्रेषित करना होता है और इन शब्दों का ध्यान किया जाता है। ये मन्त्र क्या हैं? भारतीय दर्शन के अनुसार नाम और रूप ही इस जगत् की अभिव्यक्ति के कारण है। मानवीय अन्तर्जगत् में एक भी ऐसी चित्तवृत्ति नहीं रह सकती, जो नाम-रूपात्मक न हो। यदि यह सत्य हो कि प्रकृति सर्वत्र एक ही नियम से निर्मित है, तो फिर इस नाम-रूपात्मकता को समस्त ब्रह्माण्ड का नियम कहना होगा। 'जैसे मिट्टी के एक पिण्ड को जान लेने से मिट्टी की सब चीजों का ज्ञान हो जाता है, उसी प्रकार इस देह पिण्ड को जान लेने से समस्त विश्व-ब्रह्माण्ड का ज्ञान हो जाता है।' रूप, वस्तु का मानो छिलका है और नाम या भाव भीतर का गूदा। शरीर है रूप और मन या अन्त:करण है नाम; और वाक्शक्तियुक्त समस्त प्राणियों में इस नाम के साथ उसके वाचक शब्दों का अभेद्य योग रहता है। व्यष्टि मानव के परिच्छिन्न महत् या चित्त में विचार-तरंगें पहले 'शब्द' के रूप में उठती हैं और फिर बाद में तदपेक्षा स्थूलतर 'रूप' धारण कर लेती हैं।

बृहत् ब्रह्माण्ड में भी ब्रह्मा, हिरण्यगर्भ या समष्टि-महत् ने पहले अपने को नाम के और फिर बाद में रूप के आकार में अर्थात् इस परिदृश्यमान जगत् के आकार में अभिव्यक्त किया। यह सारा व्यक्त इन्द्रियग्राह्य जगत् रूप है, और इसके पीछे है अनन्त अव्यक्त स्फोट। स्फोट का अर्थ है— समस्त जगत् की अभिव्यक्ति का कारण शब्द-ब्रह्म। समस्त नामों अर्थात् भावों का नित्य-समवायी उपादानस्वरूप यह नित्य स्फोट ही वह शक्ति है, जिससे ईश्वर इस विश्व की सृष्टि करता है। यही नहीं, ईश्वर पहले स्फोट-रूप में परिणत हो जाता है और तत्पश्चात् अपने को उससे भी स्थूल इस इन्द्रियग्राह्य जगत् के रूप में परिणत कर लेता है। इस स्फोट का एक मात्र वाचक शब्द है 'ॐ'। चूंकि हम किसी भी उपाय से शब्द को भाव से अलग नहीं कर सकते, इसलिए 'ॐ' भी इस नित्य स्फोट से नित्य संयुक्त है। अतएव समस्त विश्व की उत्पत्ति सारे नाम-रूपों की जननीस्वरूप इस ओंकार-रूप पवित्रतम शब्द से ही मानी जा सकती है। इस सम्बन्ध में यह आशंका उत्पन्न हो सकती है कि यद्यपि शब्द और भाव में नित्य सम्बन्ध है, तथापि एक ही भाव के अनेक वाचक शब्द हो सकते हैं, इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि यह 'ॐ' नामक शब्द विशेष ही सारे जगत् की अभिव्यक्ति के कारणस्वरूप भाव का वाचक हो। तो इस पर हमारा उत्तर यह है कि एकमेव यह 'ॐ' ही इस प्रकार सर्वभाव-व्यापी वाचक शब्द है, अन्य कोई भी उसके समान नहीं। स्फोट ही सारे शब्दों का उपादान है, फिर भी वह स्वयं पूर्ण रूप से विकसित कोई विशिष्ट शब्द नहीं है। अर्थात् यदि उन

सब भेदों को, जो एक भाव को दूसरे से अलग करते हैं, निकाल दिया जाए, तो जो कुछ बचा रहता है, वही स्फोट है। इसलिए इस स्फोट को 'नादब्रह्म' कहते हैं।

अब इस अव्यक्त स्फोट को प्रकाशित करने के लिए यदि किसी वाचक शब्द का उपयोग किया जाय, तो यह शब्द उसे इतना विशिष्टीकृत कर देता है कि उसका फिर स्फोटत्व ही नहीं रह जाता। इसीलिए जो वाचक शब्द उसे सबसे कम विशिष्टीकृत करेगा, पर साथ ही उसके स्वरूप को यथासम्भव पूरी तरह प्रकाशित करेगा, वही उनका सबसे सच्चा वाचक होगा। और यह वाचक शब्द है एकमात्र 'ॐ'। क्योंकि ये तीनों अक्षर अ, उ और म, जिनका एक साथ उच्चारण करने से 'ॐ' होता है, समस्त ध्वनियों के साधारण वाचक के तौर पर लिये जा सकते हैं। अक्षर 'अ' सारी ध्वनियों में सबसे कम विशिष्टीकृत है। इसलिए कृष्ण गीता में कहते हैं– ''अक्षरों में मैं 'अ' कार हूं।''[२] स्पष्ट रूप से उच्चारित जितनी भी ध्वनियां है, उन की उच्चारण-क्रिया मुख में जिह्वा के मूल से आरम्भ होती है और ओठों में आकर समाप्त हो जाती है– 'अ' ध्वनि कण्ठ से उच्चारित होती है और 'म' अन्तिम ओष्ठ्य ध्वनि है। और 'उ' उस शक्ति की सूचक है, जो जिह्वा मूल से आरम्भ होकर मुंह भर में लुढ़कती हुई ओठों में आकर समाप्त होती है। यदि इस 'ॐ' का उच्चारण ठीक ढ़ंग से किया जाए, तो इससे शब्दोच्चारण की सम्पूर्ण क्रिया सम्पन्न हो जाती है–दूसरे किसी भी शब्द में यह शक्ति नहीं। अतएव यह 'ॐ' ही स्फोट का सबसे उपयुक्त वाचक शब्द है–और यह स्फोट ही 'ॐ' का प्रकृत वाच्य है। चूंकि वाचक वाच्य से कभी अलग नहीं हो सकता, इसलिए 'ॐ' और स्फोट अभिन्न हैं। फिर, यह स्फोट इस व्यक्त जगत् का सूक्ष्मतम अंश होने के कारण ईश्वर के अत्यन्त निकटवर्ती है तथा ईश्वरीय ज्ञान की प्रथम अभिव्यक्ति है, इसलिए 'ॐ' ही ईश्वर का सच्चा वाचक है। जिस प्रकार अपूर्ण जीवात्मागण एकमेव अखण्ड सच्चिदानन्द ब्रह्म का चिन्तन विशेष विशेष भाव से और विशेष विशेष गुणों से युक्त रूप में ही कर सकते हैं, उसी प्रकार उसके देहरूप इस अखिल ब्रह्माण्ड का चिन्तन भी, साधक के मनोभाव के अनुसार, विभिन्न रूप से करना पड़ता है।

उपासक के मन का दिशा निर्धारण तत्त्वों की प्रबलता के अनुसार होता है। परिणामत: एक ही ब्रह्म भिन्न भिन्न रूप में भिन्न भिन्न गुणों की प्रधानता से युक्त दिख पड़ता है और वही एक विश्व विभिन्न रूपों में प्रतिभात होता है। जिस प्रकार अल्पतम विशिष्टीकृत तथा सार्वभौमिक वाचक शब्द 'ॐ' के सम्बन्ध में, वाच्य और वाचक परस्पर समवायी रूप से सम्बद्ध हैं, उसी प्रकार वाच्य और वाचक का यह अविच्छिन्न सम्बन्ध ईश्वर और विश्व के विभिन्न खण्ड भावों पर भी लागू हैं। अतएव उन में से प्रत्येक का एक विशिष्ट वाचक शब्द होना आवश्यक है। ये वाचक शब्द ऋषियों की गम्भीरतम आध्यात्मिक अनुभूति से उत्पन्न हुए हैं और वे ईश्वर तथा विश्व के जिन विशेष विशेष खण्ड भावों के वाचक हैं, उन विशेष भावों को यथासम्भव प्रकाशित करते हैं। जिस प्रकार 'ॐ' अखण्ड ब्रह्म का वाचक है, उसी प्रकार अन्यान्य मन्त्र भी उसी परम पुरुष के खण्ड खण्ड भावों के वाचक हैं। ये सभी ईश्वर के ध्यान और सत्य ज्ञान की प्राप्ति में सहायक हैं।

संदर्भ :

१. यथा सोम्यैकेन मृत्पिण्डेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातं स्यात्।
छान्दोग्योपनिषद् ।।६।१।४।।

२. अक्षराणामकारोणस्मि ।।गीता।।१०।३३।।

संवीक्षण

वेद लोक में राख्यौ गोई

डॉ. वेद प्रकाश अग्नि

मैं नहीं कह रहा हूं गोस्वामी तुलसीदास जी कह रहे हैं— 'वेद लोक में राख्यौ गोई' वेद का प्राकट्य लोक के लिये हुआ है। यह ईश्वरीय प्राण स्वर है। अपौरुषेय है। आध्यात्मिक विद्या का अक्षय स्रोत है। इसके प्राकट्य की गरिमा का गौरवपूर्ण श्रेय आर्यवर्त देश भारतवर्ष को है। भारत धर्म प्रधान देश है। इसकी चेतना में सनातन वैदिक धर्म के तत्त्व रोम-रोम में रचे पचे परिव्याप्त होते हुए न जाने कब से चले आ रहे हैं। उसकी अजस्र स्वानुभूति द्वारा अनुभव, पोषण-संवर्धन न जाने कितने यति धर्मा, त्यागी, सुश्रुवाण, अनुचान आहुत ऋषियों, मुनियों तथा योगियों के आहुत जीवन द्वारा उद्घाटित हुआ है। यह केवल मनुष्य मात्र व जीव मात्र के कल्याण के लिए ही हुआ है। उनका यह आध्यात्मिक विषयक चैतन्य का निरन्तर प्रवाह भारतीय जनजीवन को लगातार आप्लावित करता चला आ रहा है। इसमें समदृष्टि और समरसता की सत्य की अनुभूति की आधारशिला पर विश्व वन्दनीय मानव संस्कृति का आविष्कार किया। यह संस्कृति मनुष्यता की दृढ़ भित्ति-समरसता, "आत्मवत् सर्वभूतेषु के वसुधैव कुटुम्बकम्" के आधार पर स्थिर है जिसमें "सियाराममय सब जगजानी-करि प्रणाम जोरी जुग पाणि" द्वारा सब जीवों को आत्माराम समझकर प्रणाम करने का सन्देश दिया है। सब अपने आत्मस्वरूप, कोई पराया नहीं है, राममय है, सेवा सत्कार योग्य और प्रेमपात्र है।

इसी सनातन मानवीय संस्कृति को उखाड़ फैंकने और नेस्तो-नाबूद करने के लिए छठी सातवीं शताब्दी में महिषासुरी ववण्डर उठा जिसमें शान्तिप्रिय अहिंसक आत्मधारा के एहसास के चैतन्य को विचिलित और अस्त-व्यस्त करके रख दिया। उसका इतना प्रभाव तो निश्चित सहज चैतन्य के संस्कारों से भारतीय जनजीवन में चला आ रहा था, जिसे समय समय पर धर्माचार्य सजग और परिमार्जित करते चले आ रहे थे, उसमें नियोजित ढंग से बर्बरता पूर्ण बाधा खड़ी करने के कारण, उसके गहरे एहसास और चैतन्य की सहज सूझबूझ और सोच का धरातल विधर्मी प्रभाववश बदलता चला गया। तत्त्वमय जीवन के एहसास का स्थान मनोरंजन और उत्सवों ने ले लिया। रावण तो जलाया गया पर सब बुराइयों की जड़ 'अहंकार' के मिटाने के चैतन्य पर से दृष्टि हट गई। बस परम्परा तो चलती रही परन्तु परम्परा का चैतन्यप्रद संजीवनी तत्त्व लुप्त हो गया। उस तत्त्व को जोड़ने और जुड़ने के लिये तुलसी बाबा को हुंकार भरनी पड़ी। उन्होंने चिताया ऋषियों, मुनियों व सत्पुरुषों ने वेद को लोक चेतना के नाना सन्दर्भों रूपों में गोपनीय ढंग से सब के हित के लिए

विन्यस्त कर रखा है। उसे श्रद्धापूर्वक ढूंढ निकालो और उसके अमृतमय अभिसिंचन से अपने जीवन को प्रशस्त करें –

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृत गमय।।

असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर ले जाने वाला साधन आप्त (तत्त्व) वाक् है। जीवमात्र में जब तक वाक् का अस्तित्त्व है तब तक उसके भौतिक अस्तित्त्व की स्थिरता है। वाक् नौ दो ग्यारह हुआ नहीं कि अस्तित्व मिटा नहीं। इसी से सम्पूर्ण सृष्टि का आधार तत्त्व वाक् या नाद ब्रह्म को माना गया है। बाइबल में कहा गया है कि आरंभ में 'वाक' था उसी से संसार का प्रादुर्भाव हुआ। इसलाम में भी इस सत्य से इन्कार नहीं किया है। हमारे यहा सन्तों, महात्माओं और ऋषियों मुनियों ने तो पग-पग पर इस सत्य का मुक्त कंठ से उद्घोष किया है।

वेद के लोक में घुल-मिल जाने करने का माध्यम वाक् है। वाक् का जितना सूक्ष्म विचार वेद में हुआ है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। सम्प्रति उसकी यहां संक्षिप्त चर्चा कर लेना प्रासंगिक होगा।

जिस प्रकार श्रीमद्भागवत भगवान श्रीकृष्ण का वाङ्मय शरीर है, उसी प्रकार वेद परम तत्त्व या परमपुरुष का वाङ्मय शरीर है। वेद में पच्चास तत्त्वों के द्वारा इस वाङ्मय शरीर का विशद और गूढ़ गंभीर परिचय दिया गया है। वाङ्मय शरीर शब्द ब्रह्म स्वरूप है। शब्द का स्रोत वाक् या नाद या नाद ब्रह्म है। यह वाक, अनाहत नाद या शब्द ब्रह्म ही अनन्त कोटि विश्व ब्रह्माण्ड का स्रष्टा है। इसकी महिमा अपरम्पार है। इसका कृतित्व ही संसार की सर्वसमावेशी विचित्र और आश्चर्य चकित कर देने वाली लीला का विस्तार है। वैदिक अहोरात्रवाद में उत्स्फुरित ६० दण्डों की ८६४००००००० अक्षर समिध कलाओं का उन्मेष होता है। इसी प्रकार अन्यत्र अक्षर ब्रह्म की विशद चर्चा के प्रसंग में भी अक्षर ब्रह्म और वेदों के मन्त्रों की संख्या पर गंभीर और विस्तृत विचार हुआ है। उसमें संवत्सर ब्रह्म के सब देवता और तत्वों को अमृत (पूर्वार्द्ध के २४ तत्त्व) और मर्त्य (उत्तरार्द्ध के २४ तत्वों) से ऋचाओं का अक्षरात्मक उत्स्फुरण हुआ। १२०००×३६=४३२००० ऋचाएं वृहत्ती रूप में। १०८००×४० पंक्ति के रूप में =४३२००० जो ३०×३० के समूहों में स्थित हुईं। इतनी ही ४३२००० ऋचाएं यजुर्वेद में, उतनी ही ४३२००० सामवेद में हुई। प्रत्येक की गणना वृहती के बारह हजार, पक्ति के १०८०० द्वारा की गई है। इनमें से प्रत्येक में १०८००×८०=८६४००० मन्त्र हुए। ध्यान रहे "ऋचे अक्षरे परे व्योमन" का संबंध इन्हीं ३६०×३०×८०=८६४००० मन्त्रों और संवत्सर ब्रह्म के इतने सूक्ष्मातिसूक्ष्म विभागों या शब्द ब्रह्म के सूक्ष्मातिसूक्ष्म विभागों से है। यहां 'अक्षरे' का द्विवचन शब्द पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध के दो प्रकार के अक्षरों के लिये आया है। स्मरण रहे यहां उत्तरार्द्ध के अक्षर जहां उत्तरोत्तर सत, रज, तम के विविध परतों के तारतम्य भेद से अनन्त कोटि

भौतिकात्मक सृष्टि करते हैं। वहां उत्तरार्द्ध के अवरोह क्रम सत, रज, तम के क्रमशः उत्तरोत्तर अनामय रूप से उद्घाटित होने पर उत्तरोत्तर सूक्ष्म दिव्य लोकों और उनमें रहने वाले दैवीय शरीरों की रचना में सहायक होते हैं।

वेदों का अंकवाद मात्र संख्या की गणना नहीं है। उसमें अनुभूत वैदिक तत्वों को रहस्यमयी शैली में अपात्र व्यक्तियों से गुप्त रखने का जहां एक ओर प्रयास है वहीं दूसरी ओर सच्चे जिज्ञासु में सत्य के पाने की तड़प को समिध करने का उद्देश्य भी निहित है। अक्षरों की संख्या द्वारा शब्द ब्रह्म के बहिर्ब्रह्माण्ड और अन्तर्ब्रह्माण्डीय तत्वों की देश काल की स्थिति को सूक्ष्म और पारदर्शी दृष्टि द्वारा इंगित किया गया है। यजुर्वेद के २८वें अध्याय में अंकों की संख्या दो प्रकार से दी गई है। पहले विषम संख्या में दी है। ये एक से ३३ संख्या तक गिनी गई है। सम संख्या की गिनती चार से आरंभ की गई है और ४८ तक दी गई है। वैदिकों ने ३३ की संख्या से ३३ प्रकार के देवताओं के शब्द ब्रह्म के उन्मेष से साकार होने की ओर सटीक इंगित किया है तथा ४८ संख्या से बौद्धिक दर्शन के ४८ तत्वों को प्रस्तावित किया गया है। यहां वेदों में शब्द ब्रह्म की विस्तृत चर्चा के विविध सन्दर्भों में न जाते हुए इतना ही कहना प्रर्याप्त होगा कि गुरुमुख नांद, गुरुमुख वेदं, गुरु मुख रिह्या समाई। नादब्रह्म या वाक्बह्म, शब्दब्रह्म ब्रह्मज्ञानियों की साधना का विषय है। गुरु प्रसाद किसी किसी को ही प्राप्त होता है। यह दुर्लभ वस्तु है। अनुभवी सत्पुरुषों ने वैदिक काल के यतिधर्मा, योगियों, सुश्रुवान अनुचान साधकों से लेकर आज तक चर्चित सन्त साधकों ने मुक्त कण्ठ से शब्द ब्रह्म का महत्त्व स्वीकार किया है।

अनुभवी सन्तों का मानना है सच्चिदानन्दघन परम तत्त्व जब निजानन्द सन्दोह आनन्द तत्प में मग्न होता है, समाहित और समाधिस्थ रहता है तब प्रलयार्णव की अन्धकारमयी वर्णातीत परम शून्य स्थिति पर से परमसत्ता में — एकोऽहं बहुस्याम् की सिसृक्षा की कामना पैदा होती तो उस आनन्दमयी समाधि की अवस्था में अनाहत नाद या ब्रह्मनाद का अनवरत प्रवाह प्रवाहित होता है। यह प्रवाह श्रुतिगोचर नहीं होता। प्रणव की सूक्ष्म धारा में प्रवाहित रहता है जिसे मात्र अनुभवी योगी ही देख या सुन पाते हैं। प्रणव की सूक्ष्म ध्वनि में स्फोट होने पर उसकी त्रिधा यात्रा ॐ — अ ऊ म का अनुभव भी सिद्ध योगियों को होता है। यह तब होता है जब ॐकार में स्पन्दन की सूक्ष्मता और द्रुति बढ़ जाने पर उसमें प्रकाशमयी रश्मियों का प्रवाह अन्तरिक्ष में गतिमान होता है। इसी गति प्रवाह में पूर्वार्द्ध की अनामयी सूक्ष्म देव सृष्टि तथा दिव्य लोकों के प्राकट्य की सृष्टि होती है तथा उत्तरार्द्ध की भौतिकात्या सृष्टि की रचना होती है। इनकी अनेक परते हैं जिनका सृजन और पोषण बराबर युगपत् होता चला चला जाता है। उभय प्रकार की यह सृष्टि हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता की तरह परम तत्त्व के सत्य संकल्प से निरन्तर रूपान्तरित और परिवर्तित होती रहती है।

शब्द ब्रह्म की दिव्य और भौतिक रचना की अद्भुत क्षमता तथा उससे बढ़कर इस क्षमता के रहस्य को जनाने और जनाकर उससे पार लगाकर जीवको ब्रह्ममय बनाने की समर्थ वाग्ब्रह्म में है। इसका अनुभव हमारे ऋषि मुनियों, त्यागी वैरागी ब्रह्मचारियों हो या योगियों को पहले भी था और

आज भी है। इसलिये वे सब संकटों से चाहे वे लौकिक और परलौकिक हों, गुरुमुख से प्राप्त शब्द का सहारा लेने पर कसकर जोर देते हैं। कबीर "शब्दे-शब्दे अन्तरा" कहकर इसी तथ्य की ओर इंगित करते हैं और सहज शब्द की गुरु द्वारा सहज प्राप्ति होने पर सहज समाधि लग जाने की बात करते हैं जिसके लग जाने पर दिनोंदिन आनन्द सवाया बढ़ते लगता है तो मीरा गुरु से राम रत्न पाकर फूले नहीं समाती है– "वस्तु अमोलक दीनी मेरे सत्गुरु कृपा करि अपनायों।" इससे जन्म जन्म की पूंजी, खोई हुई पूंजी के मिल जाने पर जीवन कृतकृत्य हो गया, माया की निवृत्ति हो गई हरि से मिलन हो गया। परम संत दादू दयाल नाद ब्रह्म वाक् या शब्द ब्रह्म की महिमा का बखान इन शब्दों में करते हैं–

सब्दै सब ऊपजै सबदै सबै समाइ।।
दादू सब्दै ही सच पाइयै सब्दै ही संतोष।।
सब्दैहि अस्थिर भया, सब्दै भागे शोक।
दादू सब्दै ही सूषिम भया, सब्दै सहज समान।।
सब्दै हि त्रिगुणमिलै, सब्दे त्रियल प्राण।।
दादू सब्दै हि मुक्ता भया, सब्दै सुरझै प्राण।
सब्दै ही सूझै सबौ, सब्दै समझे जांण।।

इस तरह अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड की संपूर्ण सृष्टि का विविध विस्तार वाग्ब्रह्म की शक्ति का ही अद्‌भुत विस्तार, क्रिया कलाप और खेल है। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए सन्त शिरोमणि दादू कहते हैं कि वाक् ही ॐ रूप में परिणत होकर बहुविध विश्व की रचना करता है–

वो ऊँ थै (थ) ऊपजै, बिनसे बहुत विकार।
भाव भक्ति लै थिर रहै, दादू आत्म सार।।
पहली किया आप थैं, घट छाया बहु विधि सब विस्तार
दादू घट थैं ऊपजे मैं तैं वरन विचार।।
दादू एक सबदि सब किया, अैसा संम्रथ सोई
आगै–पीछे सौ करे, जो बल हीनां होई।।

इस तरह शब्द या नाद ब्रह्म ही सृष्टि के विस्तार के मूल आधार है। इसकी रहस्यमयी उपादेयता को विचारकर ऋषियों मुनियों, सन्त महात्माओं ने लोक-परलोक के हित के बड़े बड़े मसले सहज ही हल किये हैं। जो मतिमान सजग होकर वाक्-ब्रह्म का आश्रय लेता है उसके राजपथ पर अग्रसर होता है, वह निश्चय ही आत्मविश्रान्ति को पाता है। जीवन के सार को पा लेता है और भवसागर से पार हो जाता है। कहा गया है –

सबद विचारै करणी करै, रामनाम निज हिरदै धरै।
काया मांहैं सोधै सारे, दादू कहै लहै सो पार।।

यह सहज शब्द सच्चा शब्द है जो आत्म दर्शी गुरुओं से ही मिल सकता है। इसके मिलने से ही तन मन की पीड़ा शान्त हो जाती है। मन आनंदित और प्रफुल्लित हो जाता है। कबीर के भाग्य के कपाट खुल गये जब राह में सद्गुरु से भेंट हुई—

बहे बहाए जात थे लोक वेद के साथ।
पैंडा में सद्गुर मिले दीपक दीह्ना हाथ।।

और दादूदयाल का यह अनुभव रहा कि सांचे शब्द बिना दिल का दर्द नहीं मिटता—

दादू सांचे शब्द बिन कटे न तन मन की पीर।

नाद ब्रह्म या शब्द ब्रह्म की यह महिमा वर्णनातीत है। यह आध्यात्मिक प्राणधारा से जुड़ी हुई है जिसकी अक्षुण्ण परम्परा सृष्टि के प्रारंभ से ही चली आ रही है। इस प्राण धारा को पुष्पित—पल्लवित करने में भारतीय ऋषियों मुनियों की केन्द्रीय भूमिका रही है। उन्होंने जिस सनातन सत्य का प्रत्यक्ष साक्षात् अनुभव किया है, वह अनुभव ऐसा था जो देश काल से न तो प्रभावित होता है, न बदलता है, वह सदा एक रस, सम और आनन्द स्वरूप है। संसार पटल पर जो कुछ हो रहा है वह उसी सर्वोपरि सनातन सत्ता के सत्य संकल्प से आविर्भूत और तिरोभूत हो रहा है। उसी की शरणागति अनुभूति में ही जीवन के सारस्वत आनन्द की उपलब्धि है। शेष संसार के सरकते अन्य अनेक प्रकार के ऐश्वर्य जीवन में दम्भ को बढ़ावा देने वाले काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के झूले पर लटकाकर मनुष्य को उसके शाश्वत योगक्षेम से वंचित करने वाले हैं।

दुनियावी ऐश्वर्यों की चकाचौंध भरी दौड़ में धावक को अन्ततः निराशा, अशान्ति मिलती है और वह असल में जिन वस्तुओं के संचय में सुखशान्ति समझता था उसकी असलीयत का पता चल जाने पर उसे वितृष्णा भरा प्रबल धक्का लगता है। आत्मीयता के छलावे से एकाकीपन के चौराहे पर पटका हुआ वह अपनी कराहों में जब आत्म विश्लेषण करने लगता है तब उसे जीवन की असलीयत का बोध होने लगता है कि जिसे सच्च समझ बैठे थे वह सच्च नहीं था। वह कुछ और ही था जिसे परखने, पहचानने और दृढ़तापूर्वक पकड़ने की ओर ध्यान नहीं दिया गया जब कि उस सनातन सत्य की ओर हमारे ऋषियों मुनियों ने वेदशास्त्रो में रामायण, गीता महाभारत आदि इतिहास पुराणों में एक अप्रतिहत परिचर्चा के माध्यम से मानव मात्र के कल्याण के लिये वरदान के रूप में प्रस्तुत किया। यद्यपि यह लोक हित के लिए ही रचा गया है। परन्तु शास्त्रीय वचनावली, मर्यादाओं, शाश्वत ज्ञान की गूढ़ताओं की परिसीमाओं, समाज के बहुसंख्यक घटकों की अशिक्षा से भली भान्ति परिचित युगचेता ऋषि-मुनियों सन्तों ने जहां वेद शास्त्रों के गूढ़ ज्ञान को विद्वानों के लिए मनन चिन्तन हेतु सुलभ लिखित रूप में रखा है वहां उसके अमृत रूप को जन साधारण के भले के लिये लोक मानस में विन्यस्त करने के लिये उन्होंने जिस तकनीक को अपनाया था वह आज भी विश्व के शिक्षण इतिहास में अद्वितीय, प्रचार-संचार की दृष्टि से अप्रतिम तथा प्रभाव की दृष्टि से बोजोड़ और अप्रतिहत है।

भारतीय संस्कृति अश्वत्थ वृक्ष है जो समाज को प्रतिपल तरोताजा करने वाली संजीवनी प्रदान

कर उसकी सजगता और ऊर्जा को प्राणवायु गतिशील बनाता है। इस ऊर्जा की आधार भूमि लोकमानस है। जन साधारण का यदि जीवन की सर्वश्रेष्ठ मूल्यवत्ता और जीवन कला से यदि वंचित रखा गया या रह गया तो न शास्त्र का, न ऋषियों मुनियों सत्पुरुषों की सत्य अनुभूतियों का, उनके मानव मात्र के भले के सन्देश का, उनके सही अर्थों में उत्थान और जीवन की परिपूर्णता का लक्ष्य कहीं अधूरा और अपूर्ण न रह जाए। इसी लक्ष्य से उन्होंने वेद शास्त्रों के गूढ़ जीवन रहस्य को लोक मानस में बिठाने के लिए वर्ण और आश्रम पद्धति में ज्ञानी, वीतराग आत्माराम सेवी समुदाय को तैयार किया। उन्होंने ही गांव गांव, घर-घर जाकर रूखा मिस्सा अन्न खाकर आत्म साधना करते हुए एक ओर अपने को पूर्ण किया, अपना आपा पहचाना और दूसरी ओर लोकमानस को सच्चे जीवन के सत्य ज्ञान से आलोकित किया।

पुराकाल में तप:पूत भारतीय समाज हर तरह से प्रबुद्ध था। उसमें सत्य सनातन पूर्णता का अलख जगाने वाले योगी यति सुश्रुवान अनुचान यतिधर्मा वाग्विदाम्बर मुनि वेद ज्ञान के वाक् ऐश्वर्य, नाद ब्रह्म के आश्चर्यचकित कर देने वाले ऐश्वर्यों से संसार का मार्गदर्शन करते रहे तो परवर्ती काल में यज्ञ यागों के माध्यम से नाद ब्रह्म की विलक्षणत्ता के प्रभाव से लोकमानस को तरोताजा करते रहे।

शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों का उत्तरकाल में जब ह्रास हुआ तो नाद ब्रह्म, ब्रह्म शब्द की सर्वोपरि वाक् सत्ता को किनारे रख कर आडम्बर प्रधान होने लगा तो आरण्यकों और उपनिषदों ने वाक् सत्ता की सर्वोपरि महत्ता का पुन: ढिंढिंम घोष किया। सीधे सादे संक्षिप्त पर चिरगूढ़ शब्दों में भारतीय संस्कृति के सार नवनीत को सहज सरल भाषा में प्रस्तुत कर उसे लोक मानस में विन्यस्त करने का भागीरथ प्रयत्न किया।

इसके पश्चात भारतीय इतिहास काल का लुप्तप्राय: काल आता है जिसका उन्मेष महाभारत काल के पश्चात् ही हाथ में लगता है। इस युग संधि में फिर से वेद को लोक मानस से जोड़ने का जहां महाभारत और रामायण के इतिहास ग्रन्थों और अठारह पुराणों द्वारा हुआ। इससे सत्य सनातन संस्कृति और उसके जीवन मूल्यों का उद्बोधन हुआ।

इस तरह वेद शास्त्रों की गूढ़ज्ञान परंपरा की गंगा यमुना सरस्वती कभी प्रकट और कभी गुप्त होती हुई त्रिवेणी में लोकमानस द्वारा जब जब भी किसी महाकुम्भ के पर्व में डुबकी लगाई गई तो उसका स्पष्ट आभास और पुण्य लाभ भी हुआ। सुप्त सरस्वती का साक्षात्कार भी। इसकी खोज और रक्षा का श्रेय सन्तों और महात्माओं को जाता है जिनके कारण वेद का, शब्द ब्रह्म का जो ज्ञान लोक में गुप्त संस्कार के रूप चला आ रहा था उसे सत्पुरुषों, सन्तों ने अपनी वाणी से सींचकर हराभरा रखा। कहीं पर लोक गीतों में, कहीं सिद्धपुरुषों के आख्यान रूपों में, कहीं लोकोक्तियों मुहावरों में, कहीं लोक कथाओं, लोक उत्सवों के रूप में शब्द ब्रह्म के छलकते कुंभ लोक मानस की त्रिवेणी में सदा सदा के लिये अमृत घट रूप में सुरक्षित हैं जिससे भारतीय समाज का यह अमृत न केवल अक्षय संभल रहा है, अपितु यह संपूर्ण मानवता का अक्षय मंगल घट बना हुआ है।

वेद के लोक में गोपनीयता के सूत्र का मार्मिक संकेत ऋग्वेद के वाग्म्भृण सूक्त में मिलता है। इसमें इंगित किया गया है कि समस्त जगत, अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड वाक्, शब्द या नादब्रह्म का विस्तार है। वस्तुत: शब्द ही सृष्टि करता है, शब्द ही पालन करता है और वही संहार कर देता है। यह चेतना की नाना पगडंडियों को दिखाने, वाला सजग ऊर्जा को विविध गलियों में घुमाने वाला तथा उस अनगिणत ऐश्वर्यों का साक्षात्कार कराने वाला देवाधिदेव परमेश्वर है। इसकी महिमा का वर्णन नहीं हो सकता।

शब्द ब्रह्म के सन्दर्भ में हम मात्र हिमाचली लोक गाथाओं में से कतिपय सन्दर्भों को उठाएंगे और उनपर से उन तथ्यों की ओर इंगित करेंगे जो वेद के गूढ़ तत्त्व को बड़े कौशल से लोक मानस का कण्ठहार बनाएं हुए ही नहीं है अपितु बराबर आज तक उसको संस्कारित करते चले आ रहे हैं।

हिमाचली लोक गाथाओं में वैदिक संस्कृति की चेतना का प्रभाव सबसे बढ़ चढ़ कर वह भी विशुद्ध वैदिक परम्परा में उपलब्ध है। कुलूत देश के देवी देवताओं की ऋषि बहुल परम्पराओं में वहां के देऊ गुर (देवता के चेले) वाली परम्परा में वैदिक परम्परा के ऋषि, मन्त्र, देवता, छन्द आदि के साथ अभिन्नरूपता से जुड़ी हुई है। ऋषि साक्षात्कृत धर्मा है जिसने आत्मतत्त्व के विशिष्ट तेज स्वरूप को अपने अंतर्ब्रह्माण्ड और बहिर्ब्रह्माण्ड में देशकाल के सन्दर्भ में देखा है, प्रत्यक्ष अनुभव किया है। उनका महत्त्व और लोकोपयोग पहचाना है। उस गुणवत्ता के साथ अपनी आत्म तेज की चेतना को लोकहिताय एक रस किया है। आत्म तेज के प्राण प्रवाह की गति की परिसीमा ही छन्द है। छन्द देव विशेष के स्वरूप प्राण प्रवाह को किस गति से कहां पहुंचाकर उसे विशिष्ट प्रयोजन हेतु देव की सृज्यात्मक कला का स्वरूप प्राप्त करता है वह देवता है। जिस समष्टि नाद समूह से ऋषि द्वारा देवता की अनुभूति होती है, वह मंत्र है। इस तरह ऋषि, मंत्र, देवता और छन्द एक ही तत्त्व के कार्य भेद से बोधार्थ भिन्न-भिन्न रूप हैं। आत्म दृष्ट्या ये अभिन्न ही है। संस्कृत और संस्कृति के इस प्रभाव ने जन जीवन और लोक मानस को न केवल सदियों से शुद्ध रूप में संजोकर एवं बान्धकर रखा है, अपितु जीवन के लिये वरदायी स्फूर्तिप्रद मूल्यों ने उनकी निरन्तरता और उसके प्रति दृढ़ आस्थाओं को भी अक्षुण्ण रखा हुआ है। यह परम्परा बड़ी ही प्रशस्त, प्रगाढ़ और वैदिक सनातन मूल्यों की अक्षय धरोहर है। इसकी गंभीर छानबीन की भारतीय इतिहास की दृष्टि से बड़ी आवश्यकता और महत्ता है।

इस परम्परा का सीधा संबन्ध यति धर्मा योगियों से जुड़ा हुआ है जो पर और परा शक्तियों के विश्व ब्रह्माण्ड के सृत्यात्मक धर्म की गहराइयों का साक्षात्कार कर लोक मंगल के लिये उसके उपादेय अंश को परोसते हुए चले आ रहे हैं। यह एक विस्तृत और गंभीर परम्परा की धारा है जिसे कुछ शब्दों में खोल पाना संभव नहीं है। हिमाचल लोकमानस की लोकधाराओं को मोटे तौर पर निम्नलिखित श्रेणियों में बांटा जा सकता है—

१. इतिहास पुराण की गाथाओं की परम्परा।

२. मन्वन्तर धर्मी गाथाओं से जुड़ी परम्परा।

३. सनातन मानव संस्कृति से जुड़ी सम्प्रदायों की परम्परा।

४. लोक हितकारी सिद्ध पीरों युगपुरुषों की परम्परा।

इतिहास पुराणों से जुड़ी लोक गाथाएं मूलत: संस्कृत रचनाओं की चिन्तन परम्परा और भावधारा से ओतप्रोत है। इनमें युग युग से हो रहे पीढ़ी दर पीढ़ी परिवर्तित मूल्यों को मूल मूल्यों के सन्दर्भ में पिरोया गया है। ऐसी गाथाओं में ईश्वर के अवतार पुरुषोत्तमों की परिचय माधुरी का रसात्मक वर्णन किया गया है। जहां इसका लक्ष्य लोक मानस को रससिक्त करना रहा है वहां उसे धर्म की मर्यादा के संस्कारों के सांचे में ढालना भी रहा है। सामाजिक स्तर पर वर्णाश्रम धर्म के मूल्यों को साफ सुथरे जीवन और सुख-समृद्धि, शान्ति और प्रेम हेतु अपेक्षित माना गया है। इस तरह ये रचनाएं हमारे बाहर भीतर के लोक मानस का सनातन सांस्कृतिक रूप का युग युग से निर्माण करते आए हैं। ये हमारे सुख दुख, उत्थान पतन के काल में साहस और धैर्य को संभल बनते और बनाते आए हैं। यही कारण है कि सदियों के विकट झंझावत के आन्दोलित होते हुए भी यह अपनी लुणाई, रोचकता, सन्देश की गरिमा, आकर्षण और सरसता तथा प्रभाव को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं।

यह ठीक है कि आज भौतिकवादी जड़ संस्कृति के सैलाब ने हमें निर्ममता और संवेदन शून्यता के चौराहे पर खड़ा कर दिया है फिर भी जब कोई तबले की थाप या ढोल की थपथपाहट या ढोलकी ढम ढम पर लोक गाथाओं का आलाप आरंभ करता हैं तो राहगीर कलेजा थाम कर उसे सुनने के लिये घड़ी भर तो रुक ही जाता है। उसके कदम आगे डगर पर बढ़ नहीं पाते हैं।

सृष्टि कल्प या मन्वन्तर धर्मी गाथाएं और प्रार्थनाएं हमारी कल्प धर्मा चेतना से जुड़ी हुई हैं। इनमें शुरु में सृष्टि प्रक्रिया के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उसके साथ जुड़े हुए जीवन्त जीवन मूल्यों के प्रति प्रतिवर्ष लोकमानस को ऊर्जान्वित और सजग करने की परम्परा रही है। इस सन्दर्भ में त्रिगर्त प्रदेश विशेषतया कांगड़ा, चम्बा तथा हिमाचल के कुछ अन्य क्षेत्रों में आदि और अन्यत्र भी ढोलरू गाथा या गायन की परम्परा प्रसिद्ध है।

चित्रा नक्षत्र के उदय और चैत्र मास के प्रारंभ में ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी। उसके स्वरूप, रचना विधान का सांगोपांग उद्घाटन किया व रहस्यमय उन सूत्रों का खुलासा भी किया जिनका दामन पकड़कर मनुष्य सफल भवसागर से पार हो सकता है। वस्तुत: यह गाथा ब्रह्मा के जन्मोत्सव कल्पशासक की स्मृति को ताजा बनाए रखने के रूप में मनाई और गाई जाती है। किसी समय यह गाथा बड़ी विस्तृत और देशकाल के भेद से विविधतापूर्ण रही होगी। इसमें सन्देह नहीं है कि कालान्तर में राजाश्रयों के अभाव, गणमान्य लोगों की सरपरस्ती की कमी, विदेशी और विधर्मी लोगों के निरन्तर आक्रमण और अत्याचार पूर्ण अंकुश से इस विस्तृत प्रशस्त परम्परा की अनेक कड़ियां ध्वस्त होती चली गई जो कुछ बचा है। उस पर से यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि संपूर्ण सृष्टि के रहस्य को संजोकर चलने वाली यह ढोलरू परम्परा न जाने कितनी त्रिवेणियों का अमृत कुंभ सामाजिक घटक को प्रदान कर अपने अधिकांश स्वरूप को लेकर समय के गंगासागर में खो गई है। पर इसकी बची कड़ियों की महक से लगता है कि इस नन्दन कानन का

स्वरूप कहीं बहुत विस्तृत, गरिमापूर्ण और विचारों के हीरे-मोतियों से परिपूर्ण रहा होगा।

यहां इस गाथा की कड़ियों पर विमर्श पूर्ण विचार करें। गाथा का प्रारम्भ कई स्थानों पर सृष्टि के पहले के तामसिक एकार्णव स्वरूप से होती है। तब सर्वत्र तम ही तम था, अन्धेरा ही अन्धेरा था। फिर उस एकार्णव में से नारायण का प्रादुर्भाव हुआ। वर्तमान ढोलरू गाथा में प्राय: नारायण वन्दना से ही आरम्भ होता है। आरम्भ के बोल कुछ इस प्रकार है—

१ पहला ना लेइए नारायणे दा, जिन्नी रचया संसार

२. दूजा नां लेइए माई बाप दा जिन्नी दसया संसार

३. तीजा नां लेइए गुरु आपणे जिन्नी भुलियां वत्ता पायइया।

५. सुन्निदियां गुणदियां जे कोई जाणे जात बेटा।।

ढोलरू गाथा के विस्तार में न जाकर हम मात्र उपर्युक्त पंक्तियों के सांस्कृतिक महत्त्व को रेखांक्ति करेगे और उसके सन्देश के महत्त्व पर भी विचार करेंगे। मानव संस्कृति में सर्वोपरि पूज्य तत्त्व परमसत्ता है जिनकी कृपा से समस्त मंत्र, जप, तप, यज्ञ याग पूर्णता को प्राप्त होते हैं। वह नारायण ही अनादि पुरुष हैं जो स्वयं ही विश्व ब्रह्माण्ड रूप में अवतरित और रूपांतरित होते हैं। वह ही वन्दनीय, मननीय और पूजनीय हैं जिनके स्मरण मात्र से ही सब कामों में पूर्णता प्राप्त हो जाती है।

द्वितीय माता पिता के स्मरण द्वारा यह याद कराया गया है कि जन्म दाता माता पिता परम पूजनीय हैं। वेद मातृदेवो भव, पितृदेवो भव का आदेश देते हैं। ऐसे ही ढोलरू गायक संसार दर्शक होने के कारण कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

तीसरी पंक्ति द्वारा आचार्य देवो भव का स्वर मुखरित किया गया है। आचार्य देवोभव के पथ पर अग्रसर होने वाला कभी भी मन, वचन, कर्म से विभक्त व्यक्तित्व वाला नहीं होता। वह सहज होता है, एक होता है। दूसरे शब्दों में तत्व चिन्तन की सच्चाईयों को सद्गुरु के दृढ़ वचनों में प्रगाढ़ निष्ठा से दृढ़तापूर्वक ग्रहणकर अपने जीवन में उतारता है।

ढोलरू की चौथी पक्तियों में सार गर्भित रूप में पुंजीभूत रहस्यमयी जीवनताली को खोल दिया गया है। वस्तुत: जीवन के मार्मिक रहस्य के उद्घाटन का रहस्य समझाया गया है— "सुन्न दियां गुण देयां जे कोई जाणे जानबेटा" में ही वेद ज्ञान की गहन गुहर वाणी का पारदर्शी संकेत किया गया है। माने जिसने तत्त्व दर्शी वाग्विदाम्बर यति धर्मा सुश्रुवान योगियों से श्रुतिमार्ग से तत्त्वबोध को सुना है। कृपा प्रसाद रूप में प्राप्त किया है या स्वयं पात्र होने पर उस तत्त्व बोध को सुना है— सुना ही नहीं है जिसने उस बोध को बार बार गुणा है— मनन चिन्तन कर चेतना की गहराइयों में उतारा है। पूरी निष्ठा से समर्पित होकर उसे पा लिया है या कम से कम पाने का ईमानदारी से प्रयत्न किया है, ऐसा कोई विरला माई का लाल साधक ही तत्त्वदर्शी ऋषि ही वेद के उस जानबेटा, जात वेदस-सर्वदेवा-ब्रह्म तेज के मूल तत्त्व का रहस्य स्वयं समझ पाता है और दूसरों को समझा पाता है। इसका स्तवन

"अग्निमीद्वे पुरोहितम्", के अग्नि सूक्तम में किया गया है। कहना न होगा ढोलरू की लोक परम्परा में वेद की परम्परा का 'जातवेदस' मुखर हो कर कह रहा है ''लोक वेद में राख्यौ गोई'' लोक में वेद के चैतन्य को खोज कर उसके चैतन्य से समाज को ओजस्वी, ऊर्जस्वी और ब्रह्मवर्चस्वी बनाने का क्या यह सन्देश नहीं दे रहा है?

इस कड़ी में मनु शतरूपा के तप द्वारा पुरुषोत्तमनारायण को पुत्र रूप में घर में अवतरित होने का वरदान मांगने की परंपरा भी त्रिगर्त देश में बराबर प्रचलित रही है। घर में प्रत्येक मांगलिक उत्सव पर 'वधावा' वृद्धा महिलाएं गाया करती थीं। यह वधावा मनुशतरूपा के वरदान प्राप्ति की परम्परा का पोषण है। वधावा प्रार्थना है, निहोरा है परमसत्ता से कि वह प्रार्थना कर्ता के परिवार और सगे सम्बन्धियों के घर में ही अवतरित हो। वधावा शब्द संस्कृत के 'वृहदाविभूति' का ही अपभ्रंश रूप है। बधावा के बोल इस प्रकार हैं—

बरसीं बधावड़िया बरसी वीरा वे
बरसीं मेरे चाचा जी के खेत कि
चाची जी के पेट,
बधावा मेरा रंग रसिया।

इस तरह प्रार्थना की इन पंक्यिों को दुहराया जाता है और सभी सगे संबंधियों के घर में ब्रह्म सत्ता के पुत्र रूप में अवतरित होने की प्रार्थना के साथ मंगलमय उत्सव प्रारम्भ होता है। यहां यह ध्यान रखने की बात है कि बधावा का बरसना वीरा वे — 'वरेण्यावहे' का अपभ्रंश स्वरूप है। बधावा रंग रसिया से स्तुति द्वारा यह संकेत किया गया है कि वह परम सत्ता ही संसार के नाना रूपों में साकार हो आनन्दित हो रही है। भला ऐसी भाव भीनी प्रार्थना को बधावा कैसे ठुकरा सकता है।

इसी कड़ी में हिरणा गीत के गाने की प्रशस्त परम्परा रही है जो आज प्राय: कुछ ही गांव में नाम मात्र को सिसक रही है। हिरणा गान का सम्बन्ध हमारी वैदिक संस्कृति के उस गूढ़ रहस्यों के उद्घाटन से है, जिन्हें वेद ने संजोकर रखा था और लोक बोधार्थ उसे लोक मानस में हिरणा गायन के रूप में प्रचलित और स्थापित किया था। कार्तिक महीने से सूर्य नारायण उतरोत्तर अपने आग्नेय तेज को विसर्जित करते हुए आप: (जल)तत्त्व का आश्रयण ग्रहण करते हैं और पौष में वह पूर्णतया जलशायी हो जाते हैं। पौष के अन्त में उनमें तत्त्वत: फिर रूपान्तरण होने लगता है वह आप: से हिरण्यगर्भ होने की ओर अग्रसर होते हैं। यह रूपान्तरित पिण्ड ब्रह्माण्ड दोनों में ही घटित होता है। हिरणा गायन में इसी तत्त्व का स्मृति का स्मरण कराया गया तथा इस समय जीवनचर्या में आवश्यक परिवर्तन की उपादेयता को भी सुझाया गया है। हिरणा का समय बीतने पर सूर्यनारायण अपने जलीय हिरण्यगर्भ क्लेवर को त्याग कर आग्नेय या लोहित होने लगते हैं। पिण्ड ब्रह्माण्ड में अग्नि तत्त्व प्रबुद्ध होने लगते हैं। इसे ही लोहित तत्त्व कहा गया है। लोहड़ी का उत्सव वस्तुत: 'लोहिताढय' सूर्य के लोहित रूप से पूर्ण रूपांतरित होने का द्योतक है। इसी से माघ मास में सर्वत्र पोषक पदार्थों के सेवन का संकेत खिचड़ी के पोषक आहार से प्रारंभ किया गया है। लोहड़ी गान की परम्परा बड़ी ही

दिव्य और सारगर्भित रही है जो पुराने गीतों में ही मिलती है नयों में उसका स्वरूप तथ्यहीन टुच्चा और छिछला है।

भारतीय जीवन में वेद की सच्चाईयों को कई बार लकोक्तियों और खेल में सन्दर्भित कथनों के द्वारा भी बड़ी सूक्ष्मता से उकेरा गया है। ऐसा ही एक रोचक खेल इस प्रकार कहा जाता है—

उकड़
दुकड़
भबड़ भौ, अस्सी नब्वे पूरा सौ
सौ ग्लोटा तीतर मोटा, चल मदारी पैसा खोटा
खोटे दी खटयाई ,भावो रौंदी रौंदी आई।।

साधारणतया यह बेतुकी सी तुक बन्दी लगती है किन्तु गंभीरता पूर्व विचार करने पर इसमें खेल खेल के माध्यम से भारतीय दर्शन के गूढ़ तत्त्वों का बोध करा दिया गया है। उकड़ उक्थ एक ही अद्वैत तत्त्व है। सृष्टि कल्पना में वही दुकड़ द्वैत हो जाता है। उसके अनुभव में उलझने पर वह भव के भ्रमर जाल में उलझकर रह जाता है। यदि अष्टधा (अस्सी) प्रकृति और नब्वे (नवधा ग्रहों) की कारा से वही जीव ऊपर उठ जाए तो वह पूर्णता को प्राप्त हो जाता है। पूर्णता प्राप्त हो जाने पर भी यदि उसका माया रूपी मोटे तीतर में ही ध्यान है तो वह मदारी के खेल के आशय को नहीं समझ पाता है। यदि समझ जाए तो नटवर मदारी नन्दलाल की यह विश्व लीला खेल उसे माया, खोटा पैसा-सार हीन ही नजर आएगा। खोटे संसार के खोटेपन का बोध जिस जीवात्मा को हो जाता है वह उसमें लगाए परिश्रम की व्यर्थतता पर आठ-आठ आंसू रोता है।

सन्तों ने जीवन तत्त्व को बड़े ही सरल शब्दों में समझाने का प्रयत्न किया है। उदाहरण स्वरूप मैं सुजानपुर के समीप किसी गांव में रहने वाले आत्मदर्शी महात्मा के उपदेश वाक्यों को इस आशय से रख रहा हूं कि वेद तत्त्व ब्रह्मज्ञान वाक्ब्रह्म की अप्रतिहत शक्ति को किस तरह जन जन तक पहुंचाने का ही नहीं उसे जीवन चर्या का साधन बनाने का प्रयत्न उन लोगों ने किया है। भागीरथ समझाते हैं, वह मूल तत्त्व ब्रह्मतत्त्व क्या है— ओं अं सोऽहं। उसका कार्य या प्रयोजन क्या है— काया-ऐसा जापा, काटे पापा। इसका मधु अमृत क्या है— वह मुनि (उस अमृत को पा लेता है) हिय गुनि (जो गुरु प्रदत्त उपदेश पर में न ही मन मनन और चिन्तन करता है। अहे अमी —यह ब्रह्म अमृत है। इसे कौन पीता है, उसकी चाबी क्या है—पिये समी ताली, जो सबमें अपने आत्म स्वरूप को देखता है। इस तरह उन सत्पुरुष उपदेश ओ अं सोऽहं काया— ऐसो जापा काटे पापा, मधु— यह सुनि हिसे गुनि। अहे अमी-पिऐ सभी-ताली में 'वेद लोक में राख्यौ गोई' का स्पष्ट बोध होता है।

ऐंचलियों द्वारा संगीतमयी देवी उपासना की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। ऐंचली में ऐं सरस्वती बीज मन्त्र तथ्य की ओर यह इंगित करता है कि वाक् शक्ति ही किस प्रकार सृष्टि के नाना उपादानों की प्रस्तुति का हेतु होकर विविध दैवीय शक्ति रूपों में प्रादुर्भूत होती है। लोक मानस में उसे सात

बहनों की कथा के रूप में सुना सुनाया जाता है। पर यह तथ्य है कि रूप में सुना सुनाया जाता है। पर यह तथ्य है कि वाक् शक्ति या नाद ब्रह्म ही जब शरीर के सात चक्रों में स्थित होकर सक्रिय होता है तो उसके अपने अपने कार्यक्षेत्र के अनुरूप उसकी शक्ति का स्वरूप भिन्न प्रकार का रहता है।

ऐंचलियों की लोक परम्परा और उसमें निहित शक्ति तत्त्व का अध्ययन अपने आप में एक स्वतन्त्र अध्ययन का विषय है। यहां उसके विस्तार में न जाकर मात्र भगवती दुर्गा की एक भेंट की चर्चा कर लेना पर्याप्त होगा। भेंट के बोल इस प्रकार हैं—

मेरी आद भवानी
चौं कुंटों की रानी
सुखदियां मेरी माता
पञ्जा पञ्जा पांडवां भवन बनाया
बीच रखाया मोघा
मेरी आद भवानी

इस और इस प्रकार अन्य भेंटों में जो महत्त्वपूर्ण शक्ति सन्दर्भ है वह भवानी, चौं कूटों की रानी, पञ्ज पांडव और मोघा विशेष उल्लेखनीय है जिसके द्वारा वेद के गूढ़ शक्ति रहस्यों को लोक मानस में वन्दनीय बनाया गया है। चौं कूटों की रानी वस्तुत: आद भवानी के माया, कालिका, चण्डी आदि बीजों का संकेत कराया गया है। इन बीज ध्वनियों की गुरु कृपा द्वारा प्राप्ति से ही शक्ति तत्त्व का उन्मेष होता है। भाव विभोर होकर समर्पण बुद्धि से की गई दुर्गा शक्ति से निश्चय ही मां की कृपा प्राप्त होती है।

वेद लोक में राख्यौ गोई कौ इस विहंगम दृष्टि से सर्वेक्षण में यह प्रयत्न रहा है कि नादब्रह्म की प्रणाली से सत्पुरुषों द्वारा जो सतवाक् के माध्यम से जीव मात्र के लोक परलोक का जैसा हित होता है वह और किसी व्यवस्था से नहीं हो सकता। सत शब्द का ग्रहण ही आध्यात्मिक संस्कृति और समाज सम्पत्ति और समरस जीवन की आनन्द धारा का मूल मंत्र है। इस रहस्य को पहचान कर ही भोले बाबा भगवान शंकर ने रामायण शत कोटि अपारा में कैसे १०० करोड़ श्लोकों में से केवल दो अक्षर— 'राम' नाम को ही मूल्यवान माना और अंगीकार किया है। राम नाम नाद ब्रह्म है, महावाक् है—सारों का सार है। भारतीय समाज और संस्कृति को समझने का महाद्वार है।

सेवानिवृत प्राचार्य
गांव व डा० दाड़ी,
जिला कांगड़ा, हि०प्र०

संकल्प पाठ का विवेचनात्मक अध्ययन-□

डॉ. ओम दत्त सरोच

महासंकल्प पाठ का हिन्दी अनुवाद–

हरि: ॐ विष्णु विष्णु विष्णु सत् (सत्य, सनातन एवं सार रूप) हैं। अथ (माँगलिक एवं पवित्र) अनन्त-शक्ति वाले श्री नारायण रूप, अचिंत्य, अपरिमितशक्तिसंपन्न, अपनी मूलप्रकृति अव्यक्त शक्ति से सृष्टि रचना, पालन एवं संहार रूप क्रीड़ा करने वाले, समस्त जगत् की उत्पति, स्थिति एवं प्रलय के कारण, जगत् के रक्षण, शिक्षणवेता, शरणागतों के लिये कल्पवृक्ष रूप आश्रय (इच्छाओं को पूर्ण करने वाले) समस्त पराक्रमों से युक्त सत् चित् आनन्द परमेश्वर के रूप में अपने आप में समस्त अधिष्ठानों को समेटे हुये, अपने ज्ञान से कल्पित महाजलराशि में समस्त परिभ्रमण करने वाले अनेक ब्रह्माण्डों में से एक इस दृश्यमान ब्रह्माण्ड में पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्, अव्यक्त आत्मक दस गुणा अधिक सात आवरणों वाले (ब्रह्माण्ड) आधार शक्ति रूप कूर्म, वराह, धर्म, अनन्त आदि दिग्गजों से प्रतिष्ठित, ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदन्त, सार्वभौमसुप्रतीक नाम दिग्गजों की सूंड से दोलायमान बह्माण्ड के अर्न्तगत विद्यमान भुवर्लोक, स्वर्लोक, महालोक, जनलोक, तपोलोक, सत्यलोक, अधिष्ठित लोकों के नीचे शेषनाग के हजारों फणों में से एक फण के उपर सरसों के समान पृथ्वीमण्डल के अर्न्तगत अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल नामक पातालों के अपने-अपने अधिष्ठित पाताल के उपर भूलोक, सुमेरु, मेरु, मन्दरमन्दराचल, निषध, हिमगिरि, शृंगवद्, हेमकूट, दुर्धष, परियात्र, शैल, महाशैल, महेन्द्र, सह्यमलयाचल, विन्ध्य, ऋष्यमूक, चित्रकूट, मैनाक, मानसोतर, त्रिकूट, उदयाचल पर्यन्त अनेक पर्वतों से युक्त (पृथ्वी तल पर) जम्बु, प्लक्ष, शाल्भल, कुश, क्रोंच, शाक, पुष्कर सप्तद्वीपवती, लवण, इक्षु, सुरा, सर्पि, दधि, क्षीर, शुद्धजल के सात समुद्रों से युक्त (पृथ्वी पर) समस्त भूमि-रेखा पर कमल और कदम्व के समान गोलाकार कमल पुष्प कमल दल के समान विराजमान, उतर कुरु हिरण्यक, भद्र अश्क, केतुमाल, इलावृत, हरिवर्ष, किंपुरुष तथा भारत नामक नवखण्डों वाले जम्बूद्वीप में, सबसे अलग एवं सारभूत देवताओं के अभीष्ट पुण्यक्षेत्र में उत्पन्न होने के लिये अभिलषित अंग, वंग, कलिंग काम्बोज, सौवीर, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, उत्कल, मगध, मालव, नेपाल, केरल, चौल गौड, मलय, कुरु, पाँचाल, सिंहल, वत्स, मत्स्य, द्रविड़, द्रावड़, कर्णाट, राटव, शूरसेन, कोंकण, टोंकण, पांड्य, पुलिन्ध्र, आन्ध्र, द्रौण, दशार्ण, विदेह, विदर्भ, मैथिल, केकेय, मैथिल, कोशल, कुन्तल, मैन्ध्रव, जावल, सार्वसिन्धु, मद्र, मध्यदेश, पर्वत, त्रिगर्त, काश्मीर, पृष्ठाहार,चेदि, सिन्धु, पारसीक, गान्धार, वाह्लीक, पच्चाम्बु, आदि अनेक देशों से

सम्पन्न, विध्न्यारण्य, दण्डकारण्य, चम्पकारण्य, नैमिषारण्य, द्वैतारण्य, दृपरिण्य, काम्यकारण्य, सैन्धवारण्य कदलिकारण्य, धमरिण्य – इन दस अरण्यों से युक्त अयोध्या,मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, द्वारवती सप्त मोक्षदायिनी पुरियां जहां हैं, कमारिका क्षेत्र, पुरुषोत्तम क्षेत्र, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार क्षेत्र, माल क्षेत्र से युक्त, कलाप ग्राम, शम्भल ग्राम, नन्दीग्राम – इन नामों से सम्पन्न श्रीगंगा, युमना, सरस्वती, गोदावरी, नन्दा, अलकनन्दा, मन्दाकिनी, कौशिकी, नर्मदा, सरयू, कर्मनाशा, चर्मण्वती, क्षिप्रा, वेत्रवती, कावेरी, कृष्णा, फल्गू, मार्कण्डेय, रामगंगा, शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा, वितस्ता, सिन्धु, दृषद्वती, तुगभद्रा, गण्डकी आदि अनेक नदियों वाले यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान, समाधि – अष्टांग योग निष्ठ, पूजनीय वसिष्ठ, वाल्मीकि, कपिल, व्यास आदि महर्षियों द्वारा अधिष्ठित भरतखण्ड, आर्यावर्त देश के पुष्य क्षेत्र, विपाशा और सतलुज के मध्य अमुक स्थान श्री विष्णु जी द्वारा प्रवर्तमान, ब्रह्मा जी के दिन के दूसरे परार्ध, श्रीश्वेतवराह कल्प, वैवस्वतमन्वन्तर में, अठाईसवें कलियुग में कलियुग के प्रथम चरण में बुद्ध अवतार में, अमुक शुभ सम्वत्सर में अमुक अयन (उतरायण अथवा दक्षिणायन) में अमुक ऋतु, अमुक मास, अमुक तिथि, अमुक वार, अमुक नक्षत्र, अमुक-योग, अमुक कर्ण, अमुक मुहूर्त, अमुक राशि स्थित सूर्य, अमुक राशि में चन्द्रमा के स्थित होने, अमुक राशि में मंगल ग्रह की स्थिति में अमुक, राशि में बुध अमुक राशि में देवगुरु बृहस्पति, अमुक राशि में शुक्र और अमुक राशि में शनि, अमुक राशि में राहु, अमुक राशि में केतु-स्थित होने पर इस विशेष शुभ अवस्था में अमुक-गोत्र, अमुक प्रवर, अमुक राशि वाला, अमुक शर्मा, वर्मा आदि सपत्नीक मैं अपने तथा परिवार अथवा लोक के समस्त पापों, अरिष्टों की शान्ति के लिये सुख और समृद्धि के लिये तथा परमेश्वर की प्रसन्नता के लिये अमुक कर्म (जप, अनुष्ठान, गणपति पूजन, नवग्रहपूजन, होमादि कर्म) करूंगा।

इस विस्तृत संकल्प-पाठ में आत्म-परिचय के साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तथा काल की अविछिन्नधारा एवं कालखण्डों के परिचय का भी समावेश है। संकल्प-पाठ में मुख्य-रूप से जिन विषयों का समावेश है वे इस प्रकार से है :–

१. परमेश्वर, २. ब्रह्माण्ड, ३. भूगोल, ४. काल, ५. खगोल ६. व्यक्ति कर्मकर्ता ७. कर्म का उद्देश्य एवं प्रतिज्ञा संकल्प कर्म करने का विचार है, जिसकी अभिव्यक्ति संकल्प-पाठ के माध्यम से घोषणापूर्वक प्रतिज्ञा से की जाती है । व्यक्ति कर्म करने की प्रतिज्ञा करता है, इसके लिये वह अपने नाम, कुल, गोत्र, स्थान, देश कालादि का भी परिचय संकल्पपाठ द्वारा देता है। स्थान देश काल आदि का केवल वर्तमान का ही नहीं अपितु जब से यह ब्रह्माण्ड अस्तित्व में आया तब से लेकर काल की गणना, सृष्टि रचना व सृष्टि संचालन करने वाले परमेश्वर का स्मरण भूलोक के विभिन्न खण्डों, देशों के साथ अपने देश एवं स्थान का सम्पूर्ण परिचय व ग्रह नक्षत्रों की खगोलीय स्थिति का ज्ञान करवाते हुये विराट ब्रह्माण्ड के साथ तादातम्य की अनुभूति संकल्प-पाठ से होती है। सृष्टि के इतिहास सहित ब्रह्माण्ड का परिचयात्मक ज्ञान संकल्प-पाठ में है। इसमें निहित विभिन्न

विषयों का विवेचन आगे क्रमशः किया जा रहा है ।

परमेश्वर

संकल्प-पाठ का आरम्भ हरिः ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः इन शब्दों के उच्चरण से होता है । हरि विष्णु का ही एक नाम है—''अतुलो शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।। ''विष्णु—सहस्रनाम" हृ धातु से इन् प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न होने वाले हरि शब्द के विष्णु सिंह वानर अश्व सूर्य वायु आदि अनेक अर्थ हैं, परन्तु यहाँ विष्णु अर्थ ही विवक्षित है । ॐ प्राणवाक्षर है । परमेश्वर का वाचक है—'' ओमित्येदक्षरमिद सर्वं तस्योप-व्याख्यानं भूतं भविष्यदिति सर्वमोंकार एव । यच्चान्यत्त्रिकालातीतं तदप्योंकार एव।'' माण्डूयोपनिषद्।'' १. ओंकार परमात्मा का रूप प्रतीक है। हरि विष्णु का वाचक है। तीन वार विष्णु का उच्चारण त्रिगुणात्मक विष्णु रूप जगत का बोध करवाता है। जगत् की तीन स्थितियां उत्पति, स्थिति तथा संहार है । विष्णु ही ब्रह्मा रूप में सृष्टि के उत्पन्न करने वाले, विष्णु रूप से पालन करने वाले तथा रुद्र रूप में संहार करने वाले हैं। '' विष्णोः सकाशादुद्भूतं जगतत्रैव च स्थितम् स्थिति संयम कर्ताअसौ जगतोऽस्य जगच्चसः ।। वि०पु० १—१—३१ विष्णु ही जगत् की उत्पति, स्थिति एवं लय के कारण हैः—

'' वर्ग स्थिति विनाशानां जगतो यो जगन्मयः ।

मूलभूतो नमस्तमै विष्णवे परमात्मने ।। वि०पु० १.२.४.

बिष्लृ व्यापने धातु से नु प्रत्यय करने पर विष्णु शब्द निष्पन्न होता है। जिसका अर्थ है, व्यापनशील या सर्वव्यापक। परमात्मा सर्वव्यापक है वही जगत की उत्पति, स्थिति और लय का कारण है तथा वह विष्णु रूप है। जगत् के सभी कर्म विष्णु के निमित ही किये जाते हैं। यज्ञादि अनुष्ठान, पूजन, जप, तप आदि विष्णु के लिये, ही समर्पित रहते हैं। क्योंकि विष्णु यज्ञ ही हैं तथा यज्ञ ही विष्णु है, ऐसा भी कहा गया है। अतः कर्मकाण्ड सम्बन्धी समस्त अनुष्ठानों का नैमितिक आधार विष्णु है। सम्पूर्ण जगत विष्णु रूप है। विष्णु यज्ञरूप है। त्रिगुण रूप भी है, प्रकृति, पुरुष व्यक्त अव्यक्त व प्रधान आदि रूप भी विष्णु ही है काल रूप भी विष्णु ही है। अतः तीन गुणों, रजोगण, तमोगुण तथा सत्वगुण के ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप प्रतीक विष्णु ही हैं, समस्त कर्म विष्णु के ही निमित हैं।

अतः उस परं परमेश्वर विष्णु का स्मरण ॐ विष्णु विष्णु विष्णु ॐ उच्चारण करके किया जाता है! तीनों कालों भूत, भविष्य तथा वर्तमान में विष्णु ही समाया है, तीनों गुणों सत्व, रजः तथा तमोगुण की उत्पति का कारण अव्यक्त रूप विष्णु ही है, तथा सृष्टि की तीनों अवस्थाओं उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कारण विष्णु ही है। क्योंकि वही व्यापक है, और सर्व व्यापक ही परमेश्वर है! जगत की प्रवृति अर्थात् पालन विष्णु द्वारा होता है, तथा हमारे समस्त कर्मों का द्रष्टा रूप में साक्षी विष्णु ही है, अतः विष्णु का तीन बार उच्चारण इसी पक्ष को दर्शाता है। सकंल्प पाठ के आरम्भ में हरिः ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः यह व्याहृति परम सत्ता परमेश्वर के प्रति समर्पण एवं श्रद्धा को व्यक्त करती है।

परमात्मा के स्मरण के उपरान्त संकल्प-पाठ में बह्माण्ड का परिचय दिया जाता है! समान्यत: हम अपने परिचय में देश प्रदेश जिला एवं नगर गांव आदि को सम्मिलित करते हैं! परन्तु क्रान्त-दर्शी उदार चित तथा आध्यात्मिक-ज्ञान की पराकाष्ठा तक पहुंचे ऋषियों ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को ही ईकाई मानकर ब्रह्माण्ड के परिचय से ही संकल्प-पाठ का आरम्भ किया है ।

ब्रह्माण्ड का स्वरूप

यह ब्रह्माण्ड परमात्मा की अनन्तशक्ति से स्वत: उत्पन्न एवं संचालित है! नारायण परमेश्वर अव्यक्त रूप परमशक्ति है, और यह जगत् उसी परम-शक्ति का व्यक्त रूप है। वह अचिंत्य रूप है, जोकि मन एवं बुद्धि की सीमा से भी परे हैं! वह परमेश्वर अनन्त पराक्रम युक्त, जगत की उत्पति, स्थिति तथा लय के कारण सच्चिदानन्द हैं , तथा अपनी कल्पना शक्ति से रचित महरजल राशि स्वरूप जगत में भ्रमण कर रहे अनेक ब्रह्माण्डों में से एक यह ब्रह्माण्ड है! यहां कल्पना की गई है कि केवल एक ही ब्रह्माण्ड नहीं है, अपितु अनेक ब्रह्माण्ड हैं, तथा यह दृश्यमान ब्रह्माण्ड अनेकों में से एक है।

ब्रह्माण्ड शब्द ब्रह्म तथा अण्ड इन दोनों शब्दों के मेल से बना है। यह सम्पूर्ण जगत् सृष्टि का वाचक है! यद्यपि ब्रह्म-शब्द के परमेश्वर, सत्य, यज्ञ तथा ज्ञान आदि अनेक अर्थ हैं, परन्तु यह शब्द परमेश्वर का ही वाचक है। बृहं धातु से मनिन् प्रत्यक्ष करने पर ब्रह्म शब्द बनता है। जिसका अर्थ है परमात्मा जोकि निगुर्ण और निराकार हैं, वेदान्त-दर्शन के मूलग्रन्थ ब्रह्म सूत्र के भाष्य में शंकराचार्य जी लिखते हैं "अस्ति तावन्तित्यशुद्ध बुद्धमुक्त स्वभावं सर्वज्ञं सर्वशक्ति समन्वितं ब्रह्मा" अर्थात् शुद्ध (पवित्र एवं निर्लिप्त) बुद्ध (चेतन स्वरूप मुक्त) अविद्या माया आदि से मुक्त) स्वभाव वाला सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् नित्य शाश्वत् ब्रह्म परमेश्वर है।

ब्रह्म (परमात्मा) के अण्डे (बीज) रूप अणु से उत्पन्न होने के कारण इस जगत् को ब्रह्माण्ड कहा जाता है। समस्त ज्ञात अज्ञात ग्रह, तारे नक्षत्र आदि इस ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत हैं! अभी तक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को न तो हम जान पाये हैं और न ही खोज पाये हैं। यह पृथ्वी तो ब्रह्माण्ड का एक छोटा सा बिन्दु है। यह समस्त परम्परा जगत परमात्मा से उत्पन्न है, तथा उसी का व्यापक एवं विराट रूप है। अनन्त ब्रह्माण्ड की रचना करने वाली, संरचना करने वाली तथा लय करने वाली शक्ति ही परमेश्वर, परमात्मा, ब्रह्म, ईश्वर तथ विष्णु आदि नामों से अभिहित की जाती है। इसी परम शक्ति का गुणगान संकल्प पाठ के आरम्भ में किया जाता है ।

प्राचार्य
संस्कृत महाविद्यालय चकमोह,
जिला हमीरपुर हि०प्र०

पूर्वी राजस्थान में बावड़ी एवं जल प्रबन्धन कला

डॉ. डी.सी. चौबे

बावड़ियों की प्राप्ति भारत के पश्चिमी भाग में ज्यादा है। वैसे पश्चिमी उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पाकिस्तान का सिन्ध, भारत में राजस्थान, मालवा का क्षेत्र एवं गुजरात में इनकी भरमार है। दिल्ली में कनाट प्लेस में स्थित अग्रसेन की बावड़ी को भारतीय पुरातत्व विभाग ने अपने कब्जे में लिया है। मेहरौली क्षेत्र में सुल्तान एवं अमीर उमरा वर्ग ने कई बावड़ियों का निर्माण करवाया।[१]

बावड़ियों को वाव, वावड़ी, बावली और बावड़ी तथा अंग्रेजों ने उन्हें सीढ़ीदार कूप कहा था। इनमें पानी के स्तर पर सीढ़ियों से होकर जाया जाता है। वाव, बावड़ी गुजरात में तथा बावली, बावड़ी और बौली (बनारस में) हिन्दी भाषी क्षेत्र में बोला जाता है। बावड़ी का निर्माण सिन्धु सभ्यता से ही प्रारम्भ हो गया था जहां से विशाल स्नानागार मिला है। पहाड़ों को काटकर कुंआ सहित बावड़ी का निर्माण वैसे २०० ई. में प्रारम्भ हो गया था। आभानेरी की चांद बावड़ी ९वीं शताब्दी की है। बाबर अपने बाबरनामा में लिखता है कि १५२७ ई. में खानवा के युद्ध के बाद मैंने आगरे में बावड़ी का निर्माण करवाया था जो बाद में अकबर एवं शाहजहां द्वारा उसमें परिवर्तन कर मेहराबदार स्नानगृह एवं विश्राम स्थल बनवा दिया। ६०० ई. से पश्चिमी भारत के अपेक्षाकृत शुष्क क्षेत्र में बावड़ियां औपचारिक रूप से बनाई जाने लगीं। गुजरात के सोलंकी और बघेला नरेशों ने (८वीं से ११वीं शताब्दी) तथा बाद के मुस्लिम शासकों के काल में बावड़ियों का निर्माण हुआ।[२]

अलवर मत्स्य क्षेत्र में बांदीकुई के पास आभानेरी की चांद बावड़ी अपनी गहराई, हजारों सीढ़ियों के शिल्प और अपनी प्राचीनता के लिए प्रसिद्ध है। इसकी गहराई ६५ फीट है जिसमें छोटी-छोटी ३५०० सीढ़ियां हैं जो एक अभिराम दृश्यावली प्रस्तुत करती हैं। बावड़ी १३ स्तरीय है इसकी दीवारों और स्तम्भों का स्थापत्य और शिल्प पूर्व मुस्लिम काल का है। यह भारत में सबसे बड़ी बावड़ी है। राजस्थान और गुजरात की बावड़ियों का स्थापत्य एवं नक्काशी भारतीय शिल्प का नमूना है। इनकी दीवारों, स्तम्भों और महराबों पर चित्र उत्कीर्ण हैं। इनमें बालकनी और शिल्पयुक्त ताख बने हुए हैं।[३]

बून्दी शहर अरावली के पहाड़, वनस्पति और भू-आकृतियों के लिए प्रसिद्ध है। हाड़ौती की कला एवं संस्कृति का हृदयस्थल नगर में ५० बावड़ियां कुंड एवं जलाशय है। रानीजी की बावड़ी बून्दी शहर के बीच में स्थित है। यह एशिया महाद्वीप की सुन्दरतम बावड़ियों में से एक है। इसका निर्माण १६९९ ई. में नाथावती रानी पत्नी रावराजा अनिरुद्ध सिंह ने करवाई थी जिसकी पेंदे तक गहराई ४६ फुट है। इसके मेहराबों, स्तम्भों और दीवारों पर दशावतार की आकृतियां — वराह,

कूर्म, मत्स्य, वामन, नरसिंह, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध एवं कल्कि उत्कीर्ण हैं।[४] इसमें तीन प्रवेश द्वार हैं। भारतीय पुरातत्व विभाग ने इसे पुनजीर्वित किया है। इसमें १०० से ज्यादा सीढ़ियां हैं। बून्दी की नगर सागर बावड़ी शहर के मध्य चौगान गेट के पास है। इसका निर्माण १८८५ ई. में चंद्रभान कुंवर ने करवाया था। जिसकी गहराई ६० फुट है। इसके आस-पास मार्बल की छतरियां हैं जिन पर पेड़ पौधों, जानवरों और कुंभ के चित्र उत्कीर्ण हैं। इसके स्तम्भों पर गजलक्ष्मी, सरस्वती और विघ्न विनाशक की आकृतियां बनी हुई हैं।[५] टोंक में हाड़ी रानी की बावड़ी इसी तर्ज पर बनी है। बून्दी स्थित बाबड़ियों और सरोवरों के स्थापत्य एवं सामाजिक उपयोगिता को देखते हुए उन्हें जल मन्दिर कहा जा सकता है। बावड़ियों के मंडपों और विश्रामालयों से गर्मी में इनका उपयोग किया जाता था। यहां पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक जमावड़े का पता चलता है। बून्दी जिला प्रशासन ने रानी जी की बावड़ी, नगर सागर कुंड और नवल सागर का काफी अच्छा रख-रखाव किया है जो शहर के बहुत अच्छे पर्यटन स्थलों में हैं। इन बावड़ियों से सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की झांकी मिलती है। हरियाणा में गौस अली शाह की एक सुन्दर बावड़ी फारुख नगर में स्थित है। उसके चारों तरफ मेहराबदार मंडप है, उनके सीढ़ियां एक चौक से पक्के स्थान पर उतरती है और उस चौक के मध्य में कूप स्थित है। निर्माण विधान संकेत करता है कि यह एक सामूहिक विश्रामगृह की तरह था, जहां पर अन्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होते रहे होंगे।[६]

राजस्थान में बावड़ियों का निर्माण ग्रामीण और राजमार्ग दोनों क्षेत्रों में है। राजगढ़ की रैणी में स्थित बावड़ी ग्रामीणों के उपयोग के लिए होती थीं। पर राजमहल के पास की बावड़ी अधिकारियों और सैनिकों के उपयोग के लिए थी। राजमार्गों पर कई बावड़ियों का निर्माण कुलीन और व्यापारी वर्ग ने करवाये थे जहां करवां सराय रुककर मार्ग की विश्रान्ति मिटाते थे।[७] राजगढ़ नगर के रियासतकालीन मन्दिर, बाग, बगीचे, बावड़ियों का निर्माण विधान देखते ही बनता है। राजगढ़ शहर अपने बाग, बावड़ी, बन्दर और छतरियों के लिए प्रसिद्ध है। सुन्दर पहाड़ी पर बना किला व महल बड़े आकर्षक हैं। किले में शीशमहल की अपनी सुन्दरता और उस पर बने चित्र ऐतिहासिक अभिरामता लिए हुए हैं। राजगढ़ के दर्शनीय स्थलों में राव प्रतापसिंह की छतरी, जैन मन्दिर, महन्त की बावड़ी, शाहजी की बावड़ी से पर्यटक अभिभूत हो जाते हैं।

राजकीय कला महाविद्यालय राजगढ़ की चार दीवारी से सटी हुई एक सुन्दर बावड़ी है जो तीन मंजिली प्रतीत होती है। उसकी गहराई लगभग ४० फुट है और मेहराबदार स्नानगृह एवं विश्रामगृह बने हुए हैं। इसकी सीढ़ियां मिट्टी में दब गई हैं। इसका जीर्णोद्धार अपेक्षित है पर सड़क पर स्थित होने के कारण ऊँची दीवार बनाकर उस ओर जाने से रोक दिया गया है। बावड़ी की गहराई वाले क्षेत्र की दीवार से लगा हुआ एक कुंआ है जिसमें बावड़ी की तरफ से झरोखे भी हैं। स्नान का पानी निश्चित तौर पर बावड़ी में ही जाता होगा और पुनः पेंदे से रिसाव से पानी शुद्ध होकर कुंए में 'रिचार्ज' होकर भू-जल स्तर को बनाए रखता होगा। कूप के ऊपर पत्थर का निर्माण और छोटा हौज है, जिसमें चरस के द्वारा पानी निकालकर भूमि को सिंचित किया जाता होगा। यह बावड़ी किसने बनवाई इसकी खोज चल रही है।[८]

पुराने राजगढ़ में एक सुन्दर बावड़ी है जो प्रतापसिंह के बाद की है। ये चार मंजिली है। इसमें ५० सीढ़ियां हैं। बगल की दीवार पर दोनों ओर ९ ताख बने हुए हैं। बावड़ी की गहराई से मेहरावदार मंडप उठता है। मंडप की दीवारों में से कूप से पानी निकालने के झरोखे बने हुए हैं। एक दूसरी बावड़ी रामबाग में स्थित है। यहां पर बाबा श्यामदास का आश्रम है। आश्रम के चारों ओर छोटी-बड़ी कई छतरियां हैं। यहां पर अलवर के प्रथम शासक महाराव राजा प्रताप सिंह ने १७७० ई. के आस-पास एक विशाल छतरी बनवाई थी जिसकी चित्रकारी अलौकिक एवं मनोहारी है। २४० वर्ष पुरानी छतरी में राम-रावण युद्ध के चित्र और कृष्ण लीला के चित्र एवं राजगढ़ की सामाजिक स्थिति की चित्रकारी अद्‌भुत है।[९] एक १२ खम्भों की छतरी है, जिसमें एक राजा और दो रानियों के संगमरमर के पगले (चरण) बने हुए हैं। एक जो राजगढ़ के राजाओं की छतरी है उसके अन्दर कई अभिराम दरबार, युद्ध और पशुपक्षियों की आकृतियां हैं। इनमें एक महल के बालकनी और एक सुन्दर तन्वंगी का चित्र है। यहां की बावड़ी में मेहरावदार मंडप तो नहीं है पर कुंआ बावड़ी के अन्दर है, एकदम गोलाकार ओर उससे पानी निकालने और खेतों की सिंचाई का व्यवस्था बनी हुई है। बावड़ी लगभग ४५ फुट गहरी है। सीढ़ियां अभी अक्षुण्ण हैं। राजगढ़ शहर के मध्य में एक कुंड है, जिसमें चार छतरियां हैं। चारों तरफ इसमें सीढ़ियां बनी हुई हैं और कुछ सीढ़ियों की संख्या २०० है। कुण्ड के अन्दर बनी हुई छतरियां आठ स्तम्भों की है और काफी अभिराम प्रतीत होती है। यह कुण्ड स्थापत्य का शानदार नमूना है। राजगढ़ महिला अस्पताल के पास एक सुन्दर बावड़ी है। इसकी गहराई भी लगभग ४५ फुट है। यह चार मंजिली है। इसकी दीवारों पर ताख बने हुए हैं और कुंए से लगे हुए मेराबदार मंडप हैं। बावड़ी सूख गई है। एक और सुन्दर बावड़ी थाना गांव में है और वर्तमान अलवर राज्य परिवार जिसके वारिस भंवर जितेन्द्र सिंह जो भारत सरकार में गृह राज्यमंत्री हैं, इनके पूर्वज इसी गांव के रहने वाले थे। राजगढ़ के पास माचाड़ी में कई सुन्दर बावड़ियां हैं। बावड़ियों से लगे हुए कुंए हैं। माचाड़ी की दो बावड़ियों से अलेक्जेण्डर कनिंघम को १८६४-६५ में दो अभिलेख प्राप्त हुए हैं जो इसके निर्माता राजा रानियों की जानकारी देते हैं। एक दीवारों पर १४३९ शक सम्वत् (१८८२ ई.) का अभिलेख प्राप्त है जिसका निर्माण असलदेव ने करवाया था। बड़गूजर राजाओं के माचाड़ी में अन्तिम राजा ईश्वरसेन था जिसकी रानी चम्पादेवी ने १४५८ ई. में एक सुन्दर बावड़ी का निर्माण करवाया था। यहां से बड़गूजर राजाओं का एक और अभिलेख प्राप्त हुआ है, जिससे राजगढ़ माचाड़ी क्षेत्र पर लोधी सुल्तानों का प्रभुत्व सिद्ध होता है।

अलवर शहर में कई जलाशयों, कुंओं और बावड़ियों के ध्वंसावशेष विद्यमान हैं। अलवर के पास नारायणपुर में तालवृक्ष है, जहां पर गर्म जल का प्राकृतिक कुण्ड है। यहां सदैव गर्म जल प्रवाहित होता रहता है। ऐसे ही गर्म जल की बावड़ी दिल्ली के द्वारका में स्थित है, जिसे गंधक की बावड़ी कहा जाता है। नारायणपुर में मांडव्य ऋषि का आश्रम था।[१०] अलवर में प्राचीनकाल के तथा रियासत काल के कई कूप हैं, जिन्हें कोठी, नालचा, संथारा, पापरा, कच्चा, पक्का तथा ढेर कहा जाता था। इनके पानी की कई श्रेणियां थीं जिन्हें मतवाला, मलमल, रुकला, मीठा, खारा, तेलीया तथा वज्र तेलीया के नाम से जाना जाता था। रियासत काल के कूपों में करणी माता मन्दिर स्थित

कुंआ अभी भी चल रहा है। अलवर महाराज जयसिंह ने यूरोपीय तकनीक से जयविलास पैलेस के पास एक बड़ा कुंआ बनवाया था। अलवर स्थित मटिया कुण्ड का निर्माण राजा बख्तावर सिंह ने बाला किले में करवाया था।[११] किशन कुण्ड के पानी को साफ कर शहरवासियों के लिए पीने के लिए उपलब्ध करवाया जाता था। इस कुण्ड में पानी बरसात के मौसम में पहाड़ों से आता था। बाला कुण्ड में प्राकृतिक बरसात के पानी को घेरकर किले में लाया जाता था जिससे किले में स्थित नागरिकों, सैनिकों और मवेशियों को पानी मिलता था। अलवर स्थित बाला किला में सूरज कुण्ड का निर्माण जाट राजा सूरजमल ने करवाया था, जहां से पानी पहाड़ के नीचे स्थित जलविलास पैलेस में लाया जाता था। इस कुण्ड में उतरने की सीढ़ियां भी बनी हुई हैं।[१२]

नीमराणा स्थित बावड़ी का निर्माण पृथ्वीराज के पूर्वजों ने करवाया था आज यहां पर हेरिटेज होटल बन जाने से इस पुरानी ऐतिहासिक बावड़ी को जीवन मिल गया है। जिसके देखने के लिए हजारों पर्यटक यहां आते हैं। राजगढ़ तहसील के पारानगर में स्थित नीलकण्ठ महादेव मन्दिर के पास की बावड़ी अभी भी जीवित है जिसको बड़गूजर राजाओं ने करवाया था। इसको राजस्थान पुरातत्व विभाग देखता है। टहला के पास तालाब के जल संरक्षक और प्रबन्धन की चर्चा कनिंघम ने पूर्वी राजस्थान के अपने १८८२-८३ के सर्वे रिपोर्ट में किया है। कनिंघम के अनुसार तालाब और देवती के बांधों को बड़गूजर राजा मेन्ह या महान ने बनवाया था। इस बावड़ी का भी अभी पुनरूद्धार हुआ है।[१३]

अलवर जिले और शहर के चारों तरफ सीलीसेढ़, जयसमंद, मंगलसर, देवती, हरसौरा और तालाब के प्राकृतिक सरोवर हैं। जिन पर रियासतकाल में जल प्रबंधन कला का प्रयोग कर जल को सामाजिक, आर्थिक उपयोग में लिया जाता था। मत्स्यांचल के रियासतकालीन राजाओं ने प्राकृतिक जलधाराओं और नदियों के ऊपर 'हाइड्रोलिक सिस्टम' से बांध या दीवार खड़ीकर जलाशयों का निर्माण किया। कई बार पर्वत शृंखला की तलहटी में दीवार बनाकर अथाह बरसाती पानी को घेरकर एक जगह इकट्ठा कर उसको सालों भर उपयोग में लिया जाता था। अलवर के प्रमुख झीलों सिलीसेढ़ और जयसमंद को इस प्रकार से जोड़ा गया कि सिलीसेढ़ में उपरा चलने पर पानी जयसमंद में बहकर चला जाता था और जयसमंद के तीन ओर पहाड़ और एक ओर नीचे हजारों एकड़ भूमि सिंचित होती थी।[१४]

देवती बांध का सरोवर १६वीं शताब्दी में बड़गूजर राजाओं ने बनवाया था। यह बाणगंगा के आस-पास बांध बनाकर बनाया गया है। इसका नहर के द्वारा पानी अजबगढ़, राजगढ़ और माचाड़ी तक आता था।[१५]

इन बावड़ियों और जलकुंडों को देखने से पता चलता है कि अगर सरकार की 'वाटर हार्वेस्टिंग' योजना इनकी ओर ध्यान दे तो गिरते भू-जल स्तर को बचाया जा सकता है। एक तो इनका समेकित अध्ययन कर इनके स्थापत्य को बचाया जा सकता है तथा इनको बरसाती पानी से 'रिचार्ज' कर सकते हैं। इन बावड़ियों और जलकुंडों का वितरण ऐसा है और इनकी गहराई इतनी है कि अगर बरसाती जल से इन्हें एक बार भर दिया गया तो उस क्षेत्र का भू-जल स्तर अवश्य सुधर

जाएगा। हमारा यह अध्ययन अभी प्रारम्भिक चरण में है, समाज से नवीन परामर्श और जानकारी अपेक्षित है। इन बावड़ियों और कुंडों का निर्माण तब किया गया था जब पर्याप्त बारिश होती थी। अब जबकि बारिश कम हो गई है। हम अपने प्राकृतिक सरोवरों और पूर्वजों द्वारा बनाई गई बावड़ियों के प्रति उदासीन हो गए हैं और धरती की छाती में छेद पर छेद किए जा रहे हैं। माँ धरती की सहने की भी एक सीमा जरूर होगी, जिस दिन धरती उद्विग्न हो गई, उस दिन तबाही का मंजर होगा।

अत: बावड़ी स्थापत्य शिल्प और परम्परागत जल प्रबन्धन कला की पर्यावरणीय उपयोगिता के मद्देनजर राजस्थान की समस्त बावड़ियों का भारतीय पुरातत्व विभाग सर्वे कराकर उन्हें राजकीय धरोहर मानकर उनका जीर्णोद्धार करवावें, हम ऐसी अपेक्षा करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. कनिंघम, एलेक्जेंडर, रिपोर्ट ऑफ ए टूर इन ईस्टर्न राजपूताना एण्ड देहली, १८८२-८३ पृ. १०१
२. इंटरनेट, वीकीपीडिया एवं बाबरनामा से उद्धृत बैबरीज सम्पादित, ४८६-८७
३. कनिघंम, एलेक्जेंडर, रिपोर्ट ऑफ ईस्टर्न राजपूताना, १८८२-८३ पृ. ११०
४. कनिघम एलेक्जेंडर, रिपोर्ट ऑफ ईस्टर्न राजपूताना, १८८२-८३ पृ. १११
५. बूंदी जिला गजेटियर भाग-१ पृ. ५७
६. कनिंघम की रिपोर्ट
७. मेजर फैलेट, अलवर गजट, कुसुम पकाशन, अलवर।
८. मायाराम, जिला गजेटियर, अलवर, कुसुम प्रकाशन।
९. स्वयं के भ्रमण पर आधारित और बुजुर्ग मातादीन तिवाड़ी एवं एडवोकेट मुकेश मुद्गल से बातचीत के आधार पर एवं ऋतुराज, १९६९ की सीनियर स्कूल की मैग्जिन से प्राप्त आलेखों के आधार पर।
१०. मेजर पॉलेट का अलवर गजट, अलवर।
११. अनिल जोशी, अलवर दर्शन, २००४ पृ. १२५
१२. टैक्नीकल डाटा रजिस्टर सिंचाई विभाग।
१३. मिश्र. अनुपम, राजस्थान की रजत बूंदे, नई दिल्ली।
१४. मेजर पॉलेट एवं मायाराम का अलवर गजट। टैक्नीकल डाटा रजिस्टर सिंचाई विभाग अलवर।
१५. कनिंघम, एलेक्जेंडर, रिपोर्ट ऑफ ईस्टर्न राजपूताना, नई दिल्ली १८८२-८३ पृ. ११४।

प्रवक्ता इतिहास
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़-अलवर (राजस्थान)

जम्मू प्रजा परिषद् आन्दोलन

चौधरी चगर सिंह

"मेरी आयु इस समय ८५ साल हो गई है और यह आन्दोलन १९४९ से १९५३ ईस्वी तक चलता रहा है। ज्यादा आयु होने के कारण सब कुछ इतनी देर तक याद रखना कुदरत के नियमों के विपरीत है। जो कुछ भी इस समय याद है, लिखना चाहता हूँ।"

अगस्त १९४७ को जब श्री नेहरू जी भारत के प्रधानमन्त्री बने थे और जम्मू व कश्मीर के हिन्दुस्तान के साथ इलहाक के बारे में महाराजा हरिसिंह जी को हिदायत दी थी कि पहले शेख अब्दुल्ला को रिहा करो फिर इलहाक के बारे में कोई फैसला लिया जायेगा। मैं उस समय श्रीनगर में था और सब कुछ देख रहा था। अक्तूबर १९४७ में जम्मू व कश्मीर स्टेट पर कबाईलियों का हमला हो चुका था। महाराजा हरिसिंह की मुट्ठी भर फौज पाकिस्तान की फौज का मुकाबला करते करते शहीद हो रही थी। जिसमें ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह जी जम्वाल, कर्नल नारायण सिंह उड़ी सैक्टर में शहीद हो चुके थे। इधर पुंछ मीरपुर में कर्नल हीराचन्द जी दुबे थे। कर्नल वकील सिंह जी भी शहीद हो चुके थे। इस परिस्थिति में श्रीनगर में भगदड़ मच गई थी और कुछ लोग श्रीनगर छोड़कर जम्मू की तरफ आ रहे थे। गिलगित में स्वर्गीय जनरल घनसारा सिंह जी गवर्नर थे। गिलगित, असकुर्द पाकिस्तान के कब्जे में आ गये थे और जनरल घरसारा सिंह जी पाकिस्तान की कैद में हो गये थे। वहां जिस कदर हमारे सरकारी कर्मचारी थे वह कैद हो चुके थे और बाद में पाकिस्तान के साथ कैदियों के तबादला में वाघा सरहद के रास्ते हिन्दुस्तान आये थे।

उधर मीरपुर, कोटली जिले पाकिस्तान के कब्जे में आ गये थे लेकिन पुंछ नगर जिसके गवर्नर ठाकुर बलदेव सिंह जी पठानियां थे, महाराजा की फौज के कब्जे में ही रहा था। श्रीनगर में आर.एस. एस. के स्वयंसेवकों ने प्रोफेसर बलराज मधोक के नेतृत्व में संगठन बनाये रखा और कुछ लोगों ने शेख अब्दुल्ला की तनजीम के साथ मिलकर लोगों का हौसला बुलंद रखा। पाकिस्तान की बहुत कोशिश थी कि महाराजा हरिसिंह को पकड़कर पाकिस्तान के इलहाक पर दस्तखत कराये जायें। लेकिन भारत सरकार की सलाह पर महाराजा हरिसिंह जी जम्मू चले आये थे। श्रीनगर में स्वयं सेवकों ने लोगों का हौसला बुलंद रखा। आर.एस.एस. तनजीम के प्रोफेसर बलराज मधोक की रहनुमाई में पश्चिमी पाकिस्तान से आये हिन्दुओं को रिलीफ देकर उनके रहने का बन्दोबस्त किया।

चौधरी चगर सिंह जम्मू प्रजा परिषद् आन्दोलन (१९४९–१९५३) के अग्रणी आन्दोलनकारी रहे हैं। आन्दोलन की स्मृतियों पर आधारित यह ऐतिहासिक लेख उन्होंने ८५ वर्ष की आयु में १५ मई, २००५ को लिखा है।

इसी दौरान २६ अक्तूबर, १९४७ को इलहाक पर मोहर लगने से भारत सरकार की तरफ से भारतीय फौज जिसमें पटियाला, नाभा, वगैरा रियास्तों के बहादुर फौजी थे सत्तरह (१७) जहाजों में २७ अक्तूबर, १९४७ को वटमालू हवाई अड्डा पर उतरे और स्टेट की गाड़ियों पर सवार होकर उड़ी-वारामूला की तरफ बढ़ने लगे। इस फोरस के साथ आये कर्नल राये शहीद हो गये। हमारी जम्मू व कश्मीर फौज तथा संघ के स्वयंसेवकों ने बड़ी मुश्किल से हवाई अड्डे को अपने कंट्रोल में रखा था। जिसकी वजह से भारतीय फौज आसानी से श्रीनगर पहुंचकर सरहदों की तरफ बढ़ती गई और इस फौज ने कवाईलियों को खदेड़ दिया। कुछ दिन और जंगबंदी न होती तो हमारी भारतीय फौजों ने तमाम जम्मू कश्मीर को अपने कब्जे में ले लिया होता। शेख अब्दुल्ला की रहनुमाई में जम्मू व कश्मीर की हकूमत ने आते ही जम्मू के लोगों के साथ भेदभाव बरतना शुरू कर दिया। उस वक्त प्रोफेसर बलराज मधोक और चन्द जम्मू के नेताओं ने नवम्बर, १९४७ में पंडित प्रेमनाथ डोगरा की रहनुमाई में प्रजा परिषद सियासी जमात की बुनियाद रखी। उस समय हिन्दुस्तान भर में चन्द सियासी तनजीमें थीं। इण्डियन नैशनल कांग्रेस, मुसलिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया, हिन्दू महासभा, लेकिन कोई भी शेख अब्दुल्ला जो नैशनल कान्फ्रेंस के सरवराह थे, से टक्कर लेने को तैयार न थे।

३० जनवरी, १९४८ को पूज्य महात्मा गांधी की नाथू राम गोडसे ने देहली में गोली मार कर हत्या कर दी। यह अफवाह फैला दी गई कि गोडसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का वर्कर या मैम्बर है। फिर क्या जहां-जहां भी कोई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मिलता पकड़ कर जेल में डाल दिया जाता— चुनांचे जम्मू व कश्मीर में भी पकड़ धकड़ शुरू हो गई और इस पकड़ धकड़ का पहला निशाना स्वर्गीय पण्डित प्रेमनाथ जी डोगरा थे। बहुत से कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। चुनांचे प्रोफेसर बलराज मधोक, जो उस समय श्रीनगर कालेज में प्रोफेसर थे ने कुछ तनजीमों और रहनुमाओं से मशविरा करके जम्मू में १९४८ को जम्मू व कश्मीर प्रजा परिषद सयासी जमात की बुनियाद रखी और पण्डित प्रेमनाथ डोगरा इसके प्रधान चुने गये। श्री ठाकुर धनवन्तर सिंह जी सलाथिया उप-प्रधान और श्री दुर्गा दास जी वर्मा जनरल सेक्रैट्री चुने गये वगैरा-वगैरा चुनांचे जम्मू के लोगों पर सख्तियों के कारण उन में बहुत ज्यादा गुस्सा था। उस वक्त सूबा जम्मू से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की जगह-जगह पर शाखायें चल रही थीं। श्रीनगर में प्रोफेसर बलराज मधोक इंचार्ज थे और जम्मू व कश्मीर के संघ के प्रचारक श्री जगदीश राज जी अवरोल थे। हर गांव में संघ की शाखा थी। हर तहसील में और जिला मुख्यालय पर प्रचारक थे। हमारे कठुआ में राधाकृष्ण शर्मा जिला के इंचार्ज थे और कठुआ तहसील में श्री जगदीश सिंह सम्याल प्रचारक थे। ठाकुर सहदेव सिंह (अलमारूफ साई सिंह) एक्स एम.एल.ए. अखनूर, तहसील वसोली और विलावर के प्रचारक थे। चुनांचे पण्डित प्रेमनाथ डोगरा की रिहाई के लिए यह आन्दोलन १९४८-४९ में शुरू हो चुका था। पण्डित डोगरा को छोड़ दो, बे इन्साफी नहीं चलेगी वगैरा-वगैरा के नारे लगते थे।

ठाकुर सहदेव सिंह जी को पुलिस बसोली से पकड़ कर कठुआ ला रही थी। जब कठुआ

टयूबवैल वार्ड नं. १० पहुंचे तो मैं (चगर सिंह) कुछ कार्यकर्ताओं के साथ उनसे मिला — नारे लगाये। यह वाकया १९४९ का है। उसी वक्त जम्मू से मरहूम श्री दुर्गा दास वर्मा जनरल सैक्रेट्री भी वहां आ पहुंचे और मुझे हिदायत दी गई मैं अभी से अंडर ग्राऊंड चला जाऊं और जिला कठुआ के आंदोलन को चलाने के लिए काम करूं। मैं उसी समय पुलीस की नजरों से ओझल हो गया। तकरीबन ८ महीने अंडर ग्राऊंड रहकर जिला भर में भाग दौड़ करता रहा। उस वक्त कठुआ में हमारे डिस्ट्रिक प्रेजीडेंट पाधा विद्या प्रकाश एम.ए.एल.एल.बी (एडवोकेट) थे। चन्द माह अंडर ग्राऊंड रहने के बाद गिरफ्तार कर लिए गए। चुनांचे कठुआ से श्री ओम प्रकाश वजीर, बिशन दास गुप्ता, जेलदार रणजीत सिंह जी पडोल, तहसील प्रेजीडेंट प्रजा परिषद स्वर्गीय सुरेन्द्र उवट जी कठुआ, सावन सिंह जी पडोल, चौधरी चैन सिंह पडोल, परशोतम सिंह जी पडोल, चौधरी ध्यान सिंह जी विलावर, श्री जगदीश शास्त्री वसोली, श्री उत्तम चन्द जी शास्त्री वसोली, खेम राज वसोली वगैरा-वगैरा पकड़े गए। सूबा जम्मू से बहुत से लोग जिन में चतरू राम डोगरा, विमला डोगरा, माता पारवती वगैरा-वगैरा गिरफ्तार हुए। माता पारवती ने महिलाओं को अच्छी तरह जम्मू में संगठित किया था। जिससे यह आंदोलन दिन व दिन बढ़ता गया। १९४९ में लाला रूप चन्द नन्दा एडवोकेट जम्मू व कश्मीर प्रजा परिषद के प्रधान चुने गए और पकड़े गए। जब उनको सजा सुनाई गई और कैदियों वाले कपड़े पहनाये गये तो नन्दा जी ने घबरा कर मुआफी मांग ली। उस वक्त इस आन्दोलन को बहुत धक्का लगा। चुनांचे आंदोलन चलाने वाले नेताओं ने फैसला लिया कि इस आंदोलन को स्वयं ही इज्जत के साथ खत्म किया जाए। उस वक्त नंदा साहिब का लड़का माधो लाल नंदा एडवोकेट बी.ए. में तालीम हासिल कर रहे थे, ने अपने आपको सत्याग्रह करने का इजहार किया। इसलिए जम्मू से श्री मुलख राज जी प्रचारक आर.एस.एस., श्री नरसिंह दयाल शर्मा प्रचारक और कठुआ जिला से मैं जो इंचार्ज आंदोलन था। श्री माधोलाल नंदा एडवोकेट सपुत्र श्री रूप चन्द नन्दा एडवोकेट ने हरि टाकीज जम्मू के सामने धरने लगा कर दफा १४४ की खिलाफ वर्जी की और गांधर बली जो पुलीस में उस वक्त हेडकांस्टेबल थे, उस ने गिरफ्तार कर लिया और सिटी थाना जम्मू ले जाया गया।

सिटी थाना जम्मू में १.३०-२ बजे रात हवालात से निकाल कर हमारी बहुत पिटाई की। कारण यही था कि हम माफी मांग लें। लेकिन चारों में से एक भी टस से मस नहीं हुआ। (गांधर वली हेडकांस्टेबल पुलीस से डी.आई.जी. रिटायर हुए। वख्शी गुलाम मुहम्मद के दाहिने हाथ समझे जाते थे। अपनी ईवतताई नौकरी में गांधरवली साहिब ने सत्याग्राहियों की पिटाई करते करते डी.आई.जी. पुलीस की रैंक पर पहुंचे।) सुबह होते ही चारों को एक पोलीस की गाड़ी में डालकर जम्मू जेल ले जाया गया। हसब-दस्तूर हमारी कानूनी तौर पर जामा तलाशी हुई। नाम-वलदीयत वग़ैरा बतलाने पर कुछ तकरार हो गया, सुपरिटेंडेण्ट जेल श्री शेख फरोज दीन थे। डिप्टी सुपरिटेंडेण्ट जेल सरदार जसवन्त सिंह जी बी.एल.एल.बी. थे जो मेरे चाचा पृथ्वी पाल सिंह जी के क्लास मेट थे और जमेदार जेल पण्डित दीना नाथ शर्मा थे। यह आंदोलन सूबा जम्मू के लोगों से भेद भाव की नीति के

विरोध में और पण्डित डोगरा जी की रिहाई तक सीमित था। इसमें सूबा जम्मू में तकरीबन ४०० के लगभग सत्याग्रही थे जिसमें से कठुआ से सर्व श्री पाधा विद्या प्रकाश एडवोकट भी थे।

जैलदार रणजीत सिंह जी, चौधरी सावन सिंह, तसदीक सिंह, चैन सिंह, श्रीमती लाजवन्ती जी, बुआजी, तसदीक सिंह जी, श्री भीमसेन जी शर्मा, परशोतम सिंह, कृष्ण चन्द प्रधान नगरी पडोल, चौधरी चगर सिंह, ओम प्रकाश वजीर, लाल मरहूम बिशन दास गुप्ता, चौधरी खजूर सिंह, हरदेवसिंह, डा. सुरिन्द्र नाथ जी उवट कठुआ, श्री देवकी नन्दन, श्रीमती ग्याणु देवी, वंशीलाल शर्मा, डा. साहिब दयाल वगैरा हीरानगर और वैद्य जगदीश राज, वैद्य उत्तम चन्द शर्मा, खेमराज वसोली के थे। चौधरी ध्यान सिंह जी एक्स एम.एल.ए. विलावर तथा श्री हंसराज शर्मा विलावर से कैद हुए। इस आंदोलन के दौरान बहुत सख्तियां हुईं। लेकिन जम्मू के दलेर टस से मस नहीं हुए। आखिर आंदोलन खत्म हुआ और सब सत्याग्रही बाईज्जत रिहा हुए। जगह-जगह इनका स्वागत हुआ। पण्डित प्रेमनाथ डोगरा वाईज्जत रिहा होकर बाहर आए। प्रजा परिषद का नाम बतौर पोलिटिक्ल पार्टी जम्मू-कश्मीर से बाहर भी जानने लगे। लोगों में काफी जोश-खरोश था और इसकी शाखाएं गांव-गांव में खुल गईं। हर बड़े मसले पर हकूमत से टक्कर लेने के लिए कार्यकर्ता तैयार वर तैयार रहते थे। १९५२-५३ के आंदोलन को चलाने में कैप्टन दिवान सिंह जी उस वक्त बम्बई में स्वर्गीय महाराजा हरिसिंह जी के ए.डी.सी. भी थे, का भी सहयोग रहा। यह आंदोलन तकरीबन १३-१४ माह तक जारी रहा। हमारे सत्याग्रहियों ने १३-१३ माह तक सजाएं काटीं और हजारों रूपया जुर्माना अदा न करने पर घरों की कुर्कियां भी हुईं। उन दिनों परमिट सिस्टम लागू हो गया था, रियासत में आने जाने के लिए परमिट हासिल करना पड़ता था। पठानकोट में ट्रेड एजेंसी खोली गई, ऐसा लगने लगा जैसा रियासत जम्मू व कश्मीर अलग मुल्क है। रियासत में दाखिल होने वाले को परमिट लेकर दाखिला मिलता था। पंजाब वार्डर पर पंजाब पुलिस बिठा दी गई।

१९४९ के आन्दोलन की आग अभी सुलग रही थी, पण्डित डोगरा और दीगर सत्याग्रही रिहा हो चुके थे, जम्मू सूबा के लोगों पर सख्तियां बदस्तूर जारी थीं, जम्मू कश्मीर के हाकिम रियासत को एक आजाद मुल्क बनाने पर तुले हुए थे।

जबकि २६ अक्तूबर, १९४७ के इलहाक के मुताबिक जम्मू के लोगों की मांग थी कि मुल्क की दूसरी रियासतों की तरह हमारी रियासत भी भारत का एक हिस्सा होना चाहिए। इसी कशमकश में नये नये कानून अलाईदगी पसंद जारी होने लगे। जम्मू से भेद—भावी पालिसी से लोगों पर सखतियां बढ़ती गई। वार्डर पर पंजाब आर्मड पुलिस का पहरा हो गया जो प्रजा परिषद के वर्करों पर कड़ी नजर रखने लगे। रियासत के बाहिर और अंदर आने जाने पर सखती होने लगी। ऐसा साल १९५०, १९५१ और १९५२ तक चलता रहा। फिर १९५२ को आम चुनावों मेंरियासत जम्मू व कश्मीर के आईन के मुताबिक चुनाव हुए और बहुत बड़ी तादाद में प्रजा परिषद के कार्यकर्त्ताओं के नामजदगी कागजात रद्द कर दिये गये। जिससे तंग आकर उस वक्त इलैक्शन का बाईकाट किया गया। चुनाचे रियासत में एक गुट के चुने हुए लोगों की एसैम्बली अमल में लाई गई। साल १९५२

में और अलग विधान बनाया गया जिसमें अलग विधान, अलग प्रधान और अलग निशान (हल वाला झंडा) अमल में लाया गया। चुनांचे फिर अन्दोलन शुरू हो गया जिसमें यह नारे जोड़ दिये गये। हम क्या चाहते हैं इन्साफ-इन्साफ के आगे झुकना पड़ेगा।

अलग विधान, अलग निशान अलग प्रधान नहीं चलेगा। परमट सिस्टम खत्म करो। कस्टमज परमट खत्म करो, खत्म करो के नारे जगह-जगह लगने लगे। पण्डित डोगरा को दोबारा गिरफ्तार कर लिया गया। उनके साथ उप प्रधान ठाकुर धनवन्तर सिंह सलाथिया, चतरूराम डोगरा, ठाकुर रघुनाथ सिंह स्मयाल, शिव चरण गुप्ता, परसराम पचयाला, रिशी कुमार कोशल रिशी केश आचार्या, ठाकुर राजेन्द्र सिंह गिरफ्तार कर लिये गए। माता पार्वती जी भी गिरफ्तार कर ली गई। १९५२ में हर तहसील और जिला हेडक्वाटरों पर आन्दोलन शुरू हो गया और हजारों सत्यग्राहियों ने सत्याग्रह करके गिरफ्तारियां दीं। मैं इस अन्दोलन में ८ माह भूमिगत रहा और चार मास जेल में रहा।

जिला कठुआ से श्री लुदर मणि सांगडा ग्राम कूटा तहसील हीरानगर जिला कठुआ में मरहूम श्री ग्यान चन्द जी सांगडा, श्री गौरी शंकर सांगडा ग्राम कूटा तहसील हीरानगर जिला कठुआ, ज्वाला प्रकाश गुप्ता एडवोकेट हीरा नगर, देसराज गुप्ता हीरानगर, श्री भगत राम शर्मा घगवाल हीरानगर, माता देवकी नन्दन हीरानगर, बहन देवकी नन्दन, श्रीमति ग्याणें देवी हीरानगर, शहीद भीकम सिंह जी हीरानगर, शहीद बिहारी लाल शर्मा हीरानगर, वंशीलाल शर्मा हीरानगर, ठाकुर सागर सिंह, बाबा छज्जुराम शर्मा, वद्रीनाथ शर्मा हीरानगर, ठाकुर नथ्थ सिंह जी हीरानगर, कृष्ण लाल गुप्ता छननी हीरानगर, श्री लक्ष्मी चन्द जी छन्नी, पंण्डित हंसराज घगवाल हीरानगर, शास्त्री ईश्वर दास जी मगलूर तहसील हीरा नगर, श्री गिरधारी लाल जी हलवाई घगवाल, श्री गिरधारी लाल ड्राईवर जीवन घगवाल, ठाकुर काका सिंह जमादार मढीन, ठाकुर छज्जु राम हीरानगर, फकीर सिंह, सूवेचक हीरानगर, बाबा सागर सिंह सूवेचक हीरानगर, श्री छज्जुराम मुट्ठी कलां हीरानगर, ठाकुर परशोतम सिंह हीरानगर, द्वारिका नाथ आजारज हीरानगर, जम्मू से १९५३ में ठाकुर मोहन सिंह चाडक, श्री अमरनाथ गुप्ता, श्री अमरनाथ शर्मा, गोपालदास टीचर आदि शामिल हुए।

कठुआ से चौधरी पृथ्वी पाल सिंह जी एडवोकेट तथा पृथ्वी पाल सिंह जी एडवोकेट, के माता जी, जैलदार रणजीत सिंह जी पडोल, श्रीमती बुआ जी, चौधरी तसदीक सिंह जी, लाजवन्ती जी, श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा प्रधान पडोल, पण्डित भीमसेन जी पडोल कठुआ, रामदास जी शर्मा पडोल, श्री जरनैल सिंह जी पडोल, चौधरी प्रशोतम सिंह जी, श्री नीलकण्ड पडोल, चौधरी जोध सिंह पडोल, चौधरी लाल सिंह जी खुखयाल, श्री लाल सिंह जी जट्ट खखयाल पडोल, चौधरी चतर सिंह पडोल, चौधरी नरदेव सिंह पडोल, श्री राजकुमार जी पडोल, सरदारी लाल जी पडोल, श्री बनारसी दास जी गुप्ता पडोल, ठाकुर हरनाम सिंह, जसरोटिया लोगेट कठुआ, ठाकुर किकर सिंह जी जगंलोट कठुआ, पण्डित देस राज जंगलोअ कठुआ, श्री बाबू सिंह, श्री फकीर चन्द्र खरोट, हरवंशलाल शर्मा, श्री शंकर सिंह खरोट, डा. चन्दा सिंह जी खरोट कठुआ, मेला राम शर्मा हटली

कठुआ, चौधरी वरयाम सिंह जी तरहाडा कठुआ, चौधरी ध्यान सिंह जी पृथ्वी चक कठुआ, पण्डित रखा राम पलड्ड तहसील कठुआ, ठाकुर हरनाम सिंह पल्लड़, कठुआ, चौधरी ध्यान सिंह जी, नन कठुआ, काका राम मेहरा पडोल कठुआ, डा. धर्म चन्द पडोल, नन्द किशोर पडोल।

कठुआ नगर में पण्डित खेम राज जी, चौधरी अंचल सिंह भजवाल कठुआ, श्री मुल्ला सिंह जी, चौधरी भूरी सिंह जी, चौधरी चमेल सिंह जी भजवाल, नांगों बाबा जी, पण्डित सर्वसुख जी भल्लड़, माता पूर्ण सिंह जी भल्लड़, छज्जु सिंह जी पडोल, गन्धर्व सिंह पड़ोल तहसील कठुआ।

श्री काली दास जी कठुआ, बाबूराम शर्मा कठुआ, बावूराम योगी कठुआ, इसने बहुत बड़े जलसे में हल वाले झण्डे को आग लगाई थी। श्री अमर नाथ जी प्रजापत कठुआ, श्री ज्ञान चन्द दोसाली कठुआ, श्री फरीद हुसेन कठुआ, जनक राज प्रजापत कठुआ, श्रीमति पुष्पदेवी भजवाल कठुआ, मता पृथ्वी पाल सिंह एडवोकेट, माता चौधरी चगर सिंह, सोमादेवी बहन चौधरी चगर सिंह कठुआ, श्री ओम प्रकाश मेरथ कठुआ, पण्डित मुनशीराम जी बुधी, चौधरी ध्यान सिंह जी नन कठुआ, ठाकुर करपाल सिंह सोंथल कठुआ, ठाकुर ओंकार सिंह जी सोंथल, जैमल सिंह दन्नी वाखता कठुआ, श्री स्वर्ण देवसिंह जी सलाथिया कठुआ, श्रीमति सोमादेवी सलाथया ने डिप्टी कमीशनर की अदालत पर तिरंगा झण्डा लहराया। और हल वाला झण्डा उतार फैंका। चौधरी खजूर सिंह कठुआ, चौधरी परमोद सिंह जी, विशनदास गुप्ता, स्वर्गिय श्री बुआ दित्ता मेहरा, सत्य देवी मेहरी सपुत्री काका राम महरा कठुआ, वोधराज महरा, इशर दास मेहरा कठुआ, लाला निक्का राम महाजन कठुआ, इसी एजीटेशन को कठुआ में चलाने के लिये श्री मेहर सिंह जी भागथली, अंचल सिंह भागथली, बाबा अमरनथ, अंचल सिंह भागथली, बाबा अमरनाथ, बाबुराम शर्मा और बाबूराम योगी कठुआ, पण्डित अमरनाथ शेरपुर, बलवन्त सिंह पुरी कठुआ, मुकुन्द लाल शर्मा, श्री हरबंस लाल खरोट कठुआ आदि का बहुत योगदान रहा है। सबसे ज्यादा स्वर्ण देव सिंह जी प्रचारक ने आन्दोलन को जिला कठुआ में चलाया और विलावर में छापा मार कर ध्यान सिंह जी को पकड़कर ले गये।

ठाकुर स्वर्ण देव जी सलाथिया जो विलावर में प्रचारक आर.एस.एस. थे और तहसील हीरानगर भी इनके क्षेत्र में था, ने आन्दोलन को बहुत तेज कर दिया और हजारों की संख्या में सत्याग्राही तैयार किये। तहसील विलावर उस वक्त १९५२-५३ में वसोली तहसील का हिस्सा था। इस जगह से भी श्री स्वर्ण देव सिंह सलाथया जो उस वक्त आर.एस.एस. के प्रचारक थे, सर्व श्री गुश्र प्रकाश जी खजूरिया, नथ्था सिंह जी सुकराला निवासी, श्री मुन्शी राम शर्मा उच्चा पिंड विलावर, श्री हसंराज शर्मा विलावर, तहसील वसोहली, पण्डित विश्म्बरदास जी वसोहली। श्री महेशचन्द जी एकस एम.एल.ए. वसोहली, बाबू राम शर्मा वग़ैरा बहुत से लोगों ने सत्याग्रह में हिस्सा लिया। इनके अलावा वैद जगदीश राज, श्री वैद उत्तम चन्द शर्मा शास्त्री कावले जिकर हैं। मुझे अफसोस से लिखना पड़ता है कि जिला कठुआ से बहुत से सत्याग्राहियों के नाम याद नहीं आ रहे, मैं इस के लिए क्षमा चाहता हूं।

१९५२ में आन्दोलन शुरू होने पर बहुत सखतियां हो रही थी, चुनाचे इस आन्दोलन ने भारत आन्दोलन का रूप ले लिया चुनाचे पंजाब से श्री छज्जु राम एकस एम.एल.ए. पठानकोट, ओम प्रकाश भारद्वाज एक्स एम.एल.ए. श्री वंसीलाल गुप्ता पठानकोट, हिमाचल से श्री शान्ता कुमार पूर्व मुख्यमंत्री भी जत्थे के साथ कैद हुए। मध्य प्रदेश से विरेन्द्र सकेलचा एकस चीफ मनीस्टर भी गिरफ्तार हुए। राजस्थान से श्री भैरों सिंह जी शेखावत पूर्व मुख्यमंत्री राजस्थान और भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति थे, वह भी गिरफ्तार हुए। माह अगस्त-सितम्बर १९५२ में अन्दोलन के दौरान श्री राम नारायण सिंह राओ एम.पी. उत्तर प्रदेश, यू.एम. त्रिवेदी एम.पी., डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी के साथ गुरदासपुर पठानकोट, कठुआ, हीरानगर, साम्बा से जम्मू पहुंचे और अपनी तकरीरों में कहा, मैं आपको हिन्दुस्तान का विधान दूंगा नहीं तो मैं अपनी जान दूंगा और उस दिन वापस देहली चले गये थे।

साल १९५२-५३ के आन्दोलन में रयासत भर से बहुत से सत्याग्राहियों ने हिस्सा लिया, माता पार्वतीजी ने महिलाओं को अच्छी तरह संगठित किया। विमला डोगरा सुपुत्री चतरूराम डोगरा महिला विंग कि जनरल सेक्रेट्री थीं। सांबा से ब्रिगेडियर ओंकार सिंह, जमेदार करनैल सिंह, रसालदार वरयामसिंह जी, श्री मुलख राज प्रगाल एडवोकेट, जम्मू से रामनाथ एडवोकेट श्रीनगर से श्री मखनलाल जी, ओंकार नथ कौल, देवकी नंदन, जानकी नाथ भट्ट, भद्रवाह से श्री दया कृष्ण कोतवाल, रामनगर से येलदार वसन्त सिंह, उधमपुर से परसराम पचियाला, श्री प्रषो कुमार रियासी, ऋषिकेश कटड़ा, राजेन्द्र सिंह एम.एल.ए. चौधरी अमर सिंह भागथली, चौधरी अंचल सिंह गांव भागथली कठुआ, जैलदार धर्मसिंह जी गगोंरा तहसील पठानकोट, चौधरी रघुवीर सिंह जी नरोट जैमल सिंह तहसील पठानकोट का बहुत योगदान रहा है।

सत्याग्राही कठुआ आकर बस में सवार होकर जम्मू पहुंचते और फिर वहां सत्याग्रह करते, सत्याग्राहियों पर लाठी चार्ज वगैरा मामूली बात थी। पहले सबको पकड़कर जम्मू जेल और फिर स्पेशल जेल वनिहाल में रखा जाता था और श्रीनगर जेल में तन्हाई में रखकर कवाईली कैदी जो १९४७-४८ से सजाएं भुगत रहे थे से मार-पीट कराई जाती, चुनांचे उन्हीं दिनों जब ज्यादा सख्तियां हो रहीं थीं, ११ मई १९५३ के लगभग दोपहर के समय अमर शहीद डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी वगैर परमिट के माधोपुर पुल के रास्ते दोबारा जम्मू दाखिल हुए। उस वक्त उनके साथ प्रैस सैक्रेट्री श्री अटल बिहारी वाजपई और वैद्य गुरू दत्त देहली से थे। अटल जी को माधोपुर से वापस कर दिया। डाक्टर मुकर जी वगैर परमिट जम्मू में दाखिल हो गये हैं। उन दिनों वनीहाल, सुन्दरबनी, जोदियां और हीरानगर पुलिस फाईरिंग से तकरीबन १२-१३ लोग शहीद हो चुके थे, जिनमें ११ जनवरी १९५३ को श्री भोकम सिंह जी, और बिहारी लाल शर्मा हीरानगर पुलिस की गोलियों से शहीद हो चुके थे और रातों रात इनकी लाशों का वसन्तपुर (कठुआ) के नजदीक रावी दरिया के किनारे संस्कार कर दिया गया।

पंजाब के शाहपुर इलाका के नजदीक आधजली लाशों को स्वंयसेवक उठाकर ले गये और

फिर हीरानगर में उनका संस्कार किया गया। जिससे यह अन्दोलन और तेज हुआ। ज्योडिया में श्री मेला राम जी शहीद हुए थे। डाक्टर मुकर्जी और वैद्य गुरुदत्त जी को माधोपुर गिरफ्तार कर के सीधे श्रीनगर ले जाया गया, और किसी तंग कोठरी में चश्मा शाही के नजदीक कैदी बनाकर रखा गया। याद रहे माधोपुर के नजदीक जब रावी पुल के आधे हिस्से को पार करके रियासत जम्मू व कश्मीर जिला कठुआ के एरिया (सीमा) में दाखिल हुए तो उस वक्त के डिप्टी कमिश्नर पण्डित बलदेव चन्द जी के वारंट गिरफ्तारी जारी करने पर कठुआ जिला के सुपरिटेंडेंट पुलिस खान अब्दुल अजीत खान अलमारूफ नीला ने गिरफ्तार किया था।

चुनांचे २३ जून १९५३ को डाक्टर मुकर्जी श्रीनगर की काल कोठरी में शहीद हो गये। यह खबर आग की तरह सारे भारत में फैल गई और बगावत के डर से नेहरू जी के फरमान के मुताबिक सब कैदियों को फौरन रिहा किया गया और ऐलान हो गया कि जिस कदर पांबदियां जम्मू व कश्मीर में लगाई गई हैं वह सब वापस ली गई। परमिट सिस्टम खत्म किया गया। तिरंगा झंडा भी सरकारी इमारतों पर लहराने लगा। राष्ट्रपति का दायरा अखत्यार जम्मू व कश्मीर पर लागू हो गया। भारत का विधान रियासत पर लागू हो गया। इलेक्शन कमीशन का दायरा जम्मू व कश्मीर पर बढ़ाया गया। गो रियासत भर से जिस कदर भी सत्याग्राही जेलों में थे सब को रिहा किया गया। जगह-जगह सत्याग्राहियों का स्वागत किया गया। शेख अब्दुल्ला को वख्शी गुलाम-मुहम्मद ने गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया। सबसे पहले १९५४ में म्यूनिसीपैलिटी टाऊन ऐरिया चुनाव अमल में लाये गये। जम्मू म्यूनिसीपैलिटी प्रजा परिषद को मिली। वसोहली, कठुआ, हीरानगर टाऊन एरिया कमेटियां भी प्रजा परिषद के हाथ आई।

याद रहे जिन जिन नेताओं ने इस अन्दोलन में भाग लिया, वह अपने अपने प्रदेश में चुनावों जीते, उनमें श्री शान्ता कुमार शर्मा हिमाचल के चीफ मनिस्टर, श्री वीरेन्द्र शुक्ला मध्य-प्रदेश के मुख्यमन्त्री बने तो भैरों सिंह जी शेखावत राजस्थान के मुख्यमन्त्री बने। डाक्टर जी के मृतक शरीर को कोलकाता हवाई जहाज पर पहुंचाया गया। पण्डित डोगरा उनके मृतक शरीर के साथ कोलकाता गये। उसी बड़े आंदोलन के कारण आज देश भर में शहीदों का नाम है।

प्रजा परिषद १९५८ तक जम्मू व कश्मीर की पोलिटिकल पार्टी बनी रही। १९५८ में परेड ग्राऊंड जम्मू में प्रदेश भर से आये हुए कार्यकर्ताओं की रैली हुई। जिसमें सोची समझी बात के तहत एक रेजूलेशन श्री मुलखराज प्रगाल एडवोकेट सांबा ने रखा। जिसकी ताईद एकम चगर सिंह ने की और आम राय से यह पास हुआ और तबसे प्रजा परिषद नही बल्कि जनसंघ जमाईत कहलाने लगी।

(वकलम चौधरी चगर सिंह कठुआ)

पूर्व चेयरमैन, नगर परिषद
कठुआ, जम्मू।

स्थान वृत्त

तीर्थराज प्रयाग

डा. ओम प्रकाश दुबे

प्रयाग का कुम्भ पर्व हिन्दुओं का प्राचीनतम धार्मिक एवं सांस्कृतिक सम्मेलन कहा जा सकता है। प्राचीनतम इसलिये कि कब से इसका प्रारम्भ हुआ, इसका किसी को पता नहीं है। अनिश्चित काल से भारत के चार तीर्थों में कुम्भ पर्व होते आ रहे हैं। इसके सम्बन्ध में पौराणिक कथन इस प्रकार है—

पृथिव्या: कुम्भयोगस्य चतुर्धा भेद उच्यते।
गंगा द्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे।।

अर्थात् पृथ्वी पर चार स्थानों पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। ये स्थान हैं — हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक।

इन चारों तीर्थों में प्रत्येक बारह वर्ष के अनतराल पर पूर्ण कुम्भ पर्व होता है। किन्तु प्रयाग और हरिद्वार में छ: वर्ष पर अर्धकुम्भ पर्व भी होता है। कुम्भ पर्व के सम्बन्ध में पुराणों का मत है कि समुद्र मंथन के अवसर पर अमृत कलश के लिये जब देवासुर संग्राम हुआ, तब देवताओं ने बारह दिन तक इस सुधा पात्र को विभिन्न स्थानों में छिपा रखा था। आठ दिन तक स्वर्ग लोक में और चार दिन तक मृत्यु लोक में। वह पीयूष कुम्भ एक-एक दिन हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में छिपाया था। अत: युक्त चार स्थानों पर जब भी अमृत कलश के रक्षक देवताओं की एकत्र होने की तिथि आती है, तभी कुम्भ योग का प्रादुर्भाव होता है और उस योग में युक्त तीर्थों में स्नान करने से इस लोकवासियों को महापुण्य एवं अमृतफल की प्राप्ति होती है।

किस तीर्थ में किन तिथियों के संयोग से यह कुम्भ मेला लगता है, इसकी पुराणों में विस्तार से चर्चा है। जब सूर्य मेष राशि में तथा बृहस्पति कुम्भ राशि में पड़ते हैं, तब हरिद्वार में कुम्भ पर्व होता है। जब सूर्य और बृहस्पति दोनों कुम्भ राशि में पड़ते हैं तब नासिक में मुक्तिदायक कुम्भ योग लगता है। जब सूर्य मेष में और बृहस्पति सिंह राशि में होते हैं, तब उज्जैन में सकल सुख देने वाला कुम्भ योग लगता है। तीर्थराज प्रयाग में कुम्भ योग लगने के सम्बन्ध में पौराणिक युक्ति निम्नांकित है —

मेष राशि गते जीवे मकरे चन्द्र भास्करौ।
अमावस्या तदा योग: कुम्भस्थ तीर्थ नायके।।

अर्थात् जब मेष में बृहस्पति और चन्द्र एवं सूर्य मकर में पड़ते हैं तब तीर्थराज प्रयाग में कुम्भ योग लगता है।

वैसे तो प्रयाग में प्रतिवर्ष माघ के महीने में चन्द्र और सूर्य मकर में पड़ते हैं, किन्तु बृहस्पति का एक चक्र बारह वर्ष में पूरा होता है। अत: माघमेला का स्नान प्रतिवर्ष और कुम्भपर्व का स्नान प्रति

बारहवें वर्ष होता है।

लाखों तीर्थयात्री तीर्थराज प्रयाग में पवित्र स्नान के लिये ही आते हैं। प्रयाग में अध्यात्म, धर्म, दर्शन, कर्मकाण्ड का मूल बिन्दु गंगा एवं यमुना का पवित्र तीर्थजल है। मुगल शासक अकबर ने प्रयागराज का नाम बदलकर अल्लाहाबाद रखा, जो कालान्तर में इलाहाबाद के नाम से व्यवहृत होने लगा। प्रयागराज की प्राचीनता की परिपुष्टि हेतु भारतीय प्राचीन ग्रन्थ, वेद, पुराण एवं अन्य धर्मशास्त्र तथा संस्कृत वाङ्मय के अन्यान्य काव्य भरे पड़े हैं। 'याग' शब्द में 'प्र' उपसर्ग योग से प्रयाग की सिद्धि होती है जिसका अर्थ है — 'यागेभ्य: प्रकृष्ट:' अर्थात् जो यज्ञों में बढ़कर है अथवा 'प्रकृष्टो यागो यत्र' अर्थात् जहां प्रकृष्ट यज्ञ है, वहीं प्रयाग है।

श्रुति: प्रमाणं स्मृतय: प्रमाणं,
पुराणमप्यत्र परं प्रमाणं
यत्रास्ति गंगा यमुना प्रमाणं,
स तीर्थराजो जयति प्रयाग:।।

स्कन्द पुराण के अनुसार भी प्रयाग को 'प्र' एवं 'याग' से समन्वित कहा गया है। इसीलिये कहा जाता है कि जो सभी यज्ञों में उत्तम है उसे आदि देवों ने प्रयाग नाम दिया —

प्रकृष्ट: सर्व यागेभ्य: प्रयागमिति गीयते।
दृष्ट्वा प्रकृष्ट यागेभ्य: पुष्टेभ्यो दक्षिणादिभि:।।
प्रयागमिति तन्नाम कृत हरि हरादिभि:।।

भारत में कई स्थल पवित्र नदियों के संगमित होने से तीर्थ के रूप में विख्यात हैं, जिनमें चौदह स्थल प्रमुख हैं। इन्हें चतुर्दश प्रयाग के नाम से जाना जाता है — प्रयागराज, देव प्रयाग, रुद्र प्रयाग, कर्ण प्रयाग, नन्द प्रयाग, हरि प्रयाग, गुप्त प्रयाग, श्याम प्रयाग, केशव प्रयाग और भास्कर प्रयाग। इनमें से प्रथम पांच प्रयागों को पंच प्रयाग कहते हैं। प्रयागराज इन सभी प्रयागों में सर्वश्रेष्ठ हैं, क्योंकि विश्व प्रसिद्ध पवित्र नदियों में प्रमुख गंगा, यमुना एवं अदृश्य सरस्वती का संगम स्थल मात्र प्रयागराज में ही है। प्रयागराज को ही सभी प्रयागों का अधिपति माना गया है।

विश्व वाङ्मय का सर्वोत्कृष्ट आधारभूत प्राचीनतम सद्ग्रन्थ वेद प्रयागराज के महत्त्व का प्रतिपादन कई स्थानों पर प्रदर्शित करते हैं।

सितासिते सरिते यत्र संगते, तत्रप्लुतायो दिनमुत्पतन्ति।
ये वै तन्तं विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते।। *ऋग्वेद १०/१५*

अर्थात् जो व्यक्ति श्वेत श्याम नदियों के पवित्र संगम स्थल पर प्राण त्यागते हैं या उसमें अवगाहन करते हैं, वे अमरता को प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार एक अन्य श्लोक में सोमेश्वर से तीर्थराज प्रयाग में आकर मुक्ति प्राप्ति की प्रार्थना की गई है —

यत्र गंगा च यमुना च यत्र प्राची सरस्वती।
यत्र सोमेश्वरो देवस्तत्र माममृतं वृधीन्द्रा येन्द्रो परिस्त्रव।।

वाल्मीकि रचित रामायण के अयोध्या काण्ड में प्रयागस्थ भारद्वाज ऋषि के आश्रम में भगवान के साथ राम-लक्ष्मण और जानकी के आगमन तथा मुनिवर भारद्वाज जी के संगम की पवित्रता ज्ञापित करते हुए भगवान राम को वहीं रात्रि निवास करने का आदेश स्पष्ट वर्णित है।

महर्षि वेदव्यास रचित प्राचीन ग्रन्थ महाभारत, जिसे पांचवा वेद भी कहा जाता है, के प्रयाग की सार्थक संज्ञा प्रतिपादन सहित वनपर्व में ब्रह्मा द्वारा यज्ञ-स्थल के लिये प्रयाग का चित्रण है। शास्त्रों के अनुसार यहां पितामह ब्रह्मा ने यज्ञ किया था। उनके इस प्रकृष्ट याग से ही प्रयाग नामकरण हुआ।

गंगा यमुनयोतीर संगमं लोक विश्रुतम्।
यत्रायजत् भूतात्मा पूर्वमेव पितामहः।
प्रयागमिति विख्यात तस्माद् भरत सत्तमः।।

पद्मपुराण में तीर्थराज प्रयाग की महिमा में लिखित एक श्लोक का चतुर्थ चरण उद्धृत है –

'स तीर्थराजो जयति प्रयागः'

एक अन्य श्लोक में प्रयाग को सर्वोत्तम तीर्थ एवं मोक्षप्रद बताया गया है –

ग्रहाणांच यथा सूर्यो, नक्षत्राणां च यथा शशिः।
तीर्थमामुत्तमं तीर्थ प्रयागाख्य मनुत्तमम्।।

तुलसीकृत रामचरित मानस में भी प्रयागराज को तीर्थराज की उपाधि से अलंकृत करते हुये अतितात्विक एवं मनोहारी चित्रण है।

कहि सिय लखनहि सखहि सुनाई।
श्री मुख तीरथराज बड़ाई।।

तथा

को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ।
कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ।।

तीर्थराज प्रयाग ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव का क्षेत्र है। ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश का वास इस तीर्थ में अपनी पुण्य छवि विखेरता है। त्रिदेवों की प्रेरणा शक्ति जगदम्बा महामाया का सिद्धपीठ भी प्रयाग में है। पौराणिक कथाओं के अनुसार सती की मृत्यु से मोहग्रस्त शंकर उनका शव कंधे पर लेकर भटकने लगे तो भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को काटकर गिरा दिया। जिन पवित्र स्थानों पर सती के अंग गिरे वे शक्तिपीठ कहलाये। तीर्थराज प्रयाग इसी पौराणिक परम्परा के अनुसार शक्तिपीठ है। इस पीठ की शक्ति को ललिता कहा गया है।

'प्रयागे ललिता देवी'

कहकर ऋषियों ने तीर्थराज की महिमा का वर्णन किया है। प्रयाग में ललिता शक्ति के तीन प्रसिद्ध मन्दिर हैं, जिन्हें ललिता देवी मन्दिर, ललिता अलोपशंकरी मन्दिर कहते हैं। देवी के ग्रन्थों में शक्ति पीठ प्रयाग में विराजमान शक्तियों का उल्लेख किया गया है। इसके अनुसार गंगा के पूर्वी हिस्से में देवी बगलामुखी का उपपीठ है। यमुना के दक्षिणी हिस्से में भुवनेश्वरी उपपीठ और संगम स्थल पर

राजराजेश्वरी पीठ स्थित है। संगम की जिन पवित्र लहरों में करोड़ों श्रद्धालु भगवान बेणी माधव के पवित्र सिंहासन की छवि देखते हैं, वही देवी के उपासकों का राजराजेश्वरी पीठ है। देवी उपासकों के अनुसार प्रयाग शक्तिपीठ की अधिष्ठात्री देवी को ललिता, कमला और माधवेश्वरी नाम से पूजा जाता है। त्रिवेणी की पवित्र धाराओं में देवी क्षेमकरी का निवास कहा गया है। देवी उपासक प्रयाग में शक्ति के जिन रूपों की कल्पना करते हैं, उनमें से कुछ निराकार और कुछ साकार हैं। राजराजेश्वरी पीठ सिर्फ उपासकों की कल्पना में ही उजागर हो सकता है। इस शक्ति के रूप को मन में बसाया जा सकता है, लेकिन मूर्ति बनाकर उसका पूजन नहीं किया जा सकता है।

तीर्थराज प्रयाग का क्षेत्र पांच योजन तक फैला हुआ है, जिसमें अनेक देवी-मन्दिर, नागवासुकी मन्दिर, बड़े हनुमान जी का मन्दिर, हनुमत निकेतन, भारद्वाज आश्रम मन्दिर, मनकामेश्वर मन्दिर, श्री आदि शंकर विमान मंडपम् और सैंकड़ों अन्य मन्दिर हैं। इन सभी मन्दिरों के महत्त्व को देखकर तीर्थराज प्रयाग की महिमा का आकलन किया जा सकता है।

लोपशंकरी मन्दिर में भी देवी की निराकार उपासना होती है। मुख्य मन्दिर में आज भी कोई मूर्ति नहीं है। यहां सिर्फ देवी का हिंडोला और इनकी जलहरी है। भक्त पालने को हिलाकर उसके पास पूड़ी, हलुआ, चूड़ी और दक्षिणा चढ़ाते हैं और जलहरी के चबूतरे पर नारियल फोड़कर जल का प्रसाद लेते हैं। अनुश्रुतियों के अनुसार इस पवित्र स्थान पर सती की दसों अंगुलियां गिरी थीं, इसीलिए ये धाम हजारों वर्षों से श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है।

प्रयाग क्षेत्र का माता आनंदी मन्दिर संगम से लगभग ३० कि.मी. पूर्व में भक्तों के श्रद्धा का केन्द्र है। यह मन्दिर गंगा पार में दुर्वासा आश्रम के पास आम के बगीचों में स्थित है। यहां ऐन्द्री देवी की भव्य मूर्ति है। दुर्गा सप्तशती में देवराज इन्द्र की शक्ति को ऐन्द्री कहा गया है। ऐन्द्रीगज समारूढ़ा कहकर उन्हें याद किया गया है। यह मूर्ति भी हाथी पर सवार है। प्राचीन कथाओं के अनुसार दुर्वासा ऋषि गंगा तट पर कठोर तपस्या कर रहे थे तो राक्षसों ने उनका तप भंग करने के लिये बहुत उपद्रव मचाया। राक्षसों के उत्पात से त्रस्त होकर दुर्वासा ऋषि ने मुनिवर भारद्वाज से सलाह ली। ऋषिराज भारद्वाज ने दुर्वासा को राक्षसों से छुटकारा दिलाने के लिये यहां आदि शक्ति ऐन्द्री की मूर्ती स्थापित कर दी। माता ऐन्द्री ने इस घने जंगल में उपद्रव करने वाले सभी राक्षसों का वध कर दिया। ऋषियों द्वारा स्थापित और पूजित यह दिव्य मूर्ति आज भी भक्तों की सारी मनोकामनायें पूरी करती है।

जनशक्ति विकास एवं प्रबन्ध सलाहकार
दुबे विला ५९/२५ – आई, टैगोर टाउन,
इलाहाबाद (उ.प्र.)–२११००१

प्रयाग में गंगा की तलाश

तरुण विजय

अभी प्रयाग जाना हुआ। रज्जू भैया की स्मृति में एक कार्यक्रम था, सो न करने का प्रश्न ही नहीं उठता था। हरिमंगल ने संगम और अक्षयवट दर्शन की भी व्यवस्था के साथ बड़े हनुमान जी भी ले चलने का वायदा किया था। सिविल लाइन्स में रज्जू भैया का पैतृक घर है – अनन्दा। उनके पिता ब्रिटिशकालीन उत्तर प्रदेश के चीफ इंजीनियर थे, अच्छा रसूख था। रज्जू भैया और श्री अशोक सिंघल, जो तब संगीत के छात्र थे और शास्त्रीय गायन व वायलिन बजाने का शौक रखते थे, तभी मिले और तदनन्तर अपने-अपने शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रीय ख्याति पाकर संघ के प्रचारक बने। सो अनन्दा, जहां अब संघ कार्यालय है तथा संगम, दोनों हमारे लिए पुनीत थे। कार्यक्रम के बाद संगम की ओर गए तो प्रयाग में व्याप्त गंदगी सड़ांध तथा अव्यवस्था से मन दु:खी हुआ। सम्राट हर्षवर्धन की मूर्ति, कभी किसी ने उत्साह से स्थापित की होगी, पर अब या तो उसे नितांत ढक दिया जाए या हटा दिया जाए, अगर सम्राट हर्षवर्धन की इतनी ही दुर्दशा करनी है तो, तमाम गंदगी के ढेर, साल भर चढ़ी मालाएं धूल से अटा उन महान सम्राट का चेहरा और चारों ओर सिर्फ बदबू।

गंगा तक जाते-जाते रमेश जी बता चुके थे, बस देख ही भर लीजिएगा। आचमन के लायक तो जल है नहीं। स्नान करेंगे तो इन्फैक्शन होने का डर होगा। वैसे भी कानपुर से आगे तो गंगा, गंगा है ही नहीं।

कोई मील दो मील तक गंगा को साफ रखने को दोहे, चौपाई, अपीलें, मार्गदर्शन आदि से सारी दीवारों पर लिखावटें थीं। किसी ने बड़े-बड़े अक्षरों में अपना नाम और गंगा शुद्धिकरण की अपीलें लिखी हुई थीं। यहां तक कि किले की दीवारें अक्षयवट जहां से दिखता है उसके नीचे तक बस वे ही थे। उनका नाम और क्यों हम सबको गंगा साफ-सुथरी रखनी चाहिए। इतना सब लिखने पर भी कोई मानता नहीं। लिखने भर से मान जाया करते तो फिर कानून की किताबें छापकर ही देश सुधर जाता पुलिस। सेना, प्रशासन की जरूरत ही न होती।

छोटी नौका में हम छह, खेवनहार थे भारत लाल निषाद। गलती से हम उनको एक बार भरत बोल बैठे तो गुस्सा गए। हमारा नाम भारत है, भारत। बाल गोपाल? का करें बाबू जी, तीनों बेटियां हैं। 'अरे' हम बोले, 'काहे उदास होते हो। गंगा, जुमना, सरस्वती हैं, लक्ष्मी, दुर्गा, शारदा हैं। अच्छा है।' वह नाव खेता रहा। चुपचाप।

कुछ बीच में पहुंचे तो जल का अथाह विस्तार मन की गांठें खोल गया। अब कुछ बुरा, खरा नहीं लग रहा था। गंगा बस मां है। सिर्फ मां! पुत्रो कुपुत्रो जायते क्वचिदपि....। माँ की ममता को बेटे की नालायकियां नहीं दिखतीं। बाढ़ से भरी भागीरथी के तट से अब प्रयाग में मैया ने बुला

लिया तो और कौन होगा हम सा बड़भागी।

संध्या का समय था। गंगा में दीप जलाकर प्रवाहित किया और बस। पुणे के प्राध्यापक आठवले जो बाद में संन्यासी हो गए, गंगा को सिर्फ माँ कहते थे। गंगा माँ भी नहीं। सिर्फ माँ। उत्तरकाशी में ही उन्होंने जल समाधि ली। माँ है गंगा तो उसके आंचल में देह विसर्जित करने का भाग्य पुण्यवान ही पाते हैं।

पिछले कुंभ पर अचानक अम्मा को प्रयाग लाने का संयोग हुआ तो वही मुनव्वर राना मिले। मुनव्वर राना से हमारी पहली भेंट प्रयाग में संगम पर ही हुई थी और उन्होंने सुनाया था —

तेरे आगे अपनी मां भी मौसी जैसी लगती है
तेरी गोद में गंगा मैया अच्छा लगता है।

जिसकी गोद में मां से ज्यादा ममता और वात्सल्य मिले, जिसने हमारे घर, खेत, अन्न, मन, पुरखे ओर परलोक तारे हों, जिसकी दो बूंद लिए बिना हम जगत से विदा न लेना चाहें, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे घर के छोटे से पूजा वाले आले में बंद शीशी में जब तक दिखती रहे तब तक जान में जान बनी रहे, लगे आशीष विद्यमान है, जो हमारी, हमारी धरती और विश्वास की पहचान बनी, उस गंगा के साथ हिन्दुओं ने ही छल किया, मुसलमानों ने नहीं।

हर बाबा का आश्रम, हिन्दू का कारखाना, दफ्तर, सरकार में बैठे वे तमाम लोग, जिन्होंने गंगा को राष्ट्रीय विरासत घोषित किया, अपनी गंदगी, कूड़ा कचरा, मैला गंगा में ही बहाते हैं।

वे श्वेत वस्त्रधारी, तेजस्विता के दैदीप्यमान पुंज, शिखा, तिलक से शोभायमान, धर्म के प्रतिमान, अबाधित त्रिकाल संख्या करने वाले, चौबीसों घंटे केवल राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रहित, राष्ट्र की दुर्दशा, राष्ट्र पर छाए खतरे, राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति, राष्ट्र का समाज आदि पर ही चिंतन करने वाले, गंगा में गंदगी को प्रवाहित करते रहे।

इसलिए प्रयाग में रमेश जी ने कहा, भैया, अब तो गंगा बस देख भर लीजिए।

गंगोत्री में सभी पूज्य गंगाभक्तों के होटल हैं। वे पूजन भी कराते हैं, होटल भी चलाते हैं। होटल में सीवर व्यवस्था कहां से आए? अरे पहाड़ है, पहाड़।

सो अब सब कुछ गंगा में ही जाता है। पूजा का सामान भी। धूप-अगरबत्ती, प्लास्टिक भी और बाकी सब भी। अब तो गोमुख में भी यह हो रहा है। स्वर्ग चाहिए मोक्ष चाहिए। बैकुंठ जाना है तो गंगा जी में ही देह प्रवाहित होती है। संन्यासी गण का पार्थिव शरीर भी देह त्याग के बाद गंगा में ही अर्पित होता है। पहाड़ में तो गंगा का अट्टहास चिन्यालीसौंढ़ की भयावह ठहरी, ठिठकी झील में तबदील हो गया है, जिसमें बरसों की गंदगी, बाढ़ में आए वृक्षों के तने, लाशें, कचरा जमा ही हो रहा है। जमा ही होता जा रहा है।

कोई एक दिन तो आएगा जब कोई उसका हिसाब मांगेगा। प्रकृति? या मनुष्य? आदिशंकर कह गए —

देवि सुरेश्वरि भगवती गंगे,
त्रिभुवन तारिणी तरल तरंगे।

गंगा तो अक्षरश: आज भी देवी है, सुरेश्वरी है, त्रिभुवनतारिणी है। राक्षस तो हम हुए हैं। संगम में नौकाविहार रोमांचित करता है। पुलकित करता है। गंगा मैया का वैभव और वात्सल्य सिर्फ महसूस किया जा सकता है। लौटने का मन न होते हुए भी लौटना होता है। भारत लाल से पूछ ही लिया — "यहां से बनारस कितना दूर होगा? नाव से जा सकते हैं?"

वह खुश होकर बोला, "हाथ वाली नाव से जाएंगे तो तीन दिन में पहुंच जाएंगे। मोटर वोट शायद एक दिन में पहुंचा दे।"

जाने का मन है। अगली बार कुछ ऐसा करेंगे। एक समय था जब हावड़ा तक नौकाएं, जहाज गंगा में चलते थे। सामान और लोग गंगा जी में यात्रा करते थे। सब खत्म हुआ।

गंगामय भारत। भारतमय गंगा। दोनों का मेल ईश्वरीय ही है। मां का नाम गंगा देवी। पिता का नाम गंगा शरण। दादा का नाम गंगा भक्त सिंह। परदादा गंगाराम। बेटा गंगा चरण। दुनिया में कहीं किसी देश, किसी समाज में किसी नदी के प्रति यह सम्पूर्ण समर्पण, भक्ति, धन्यता का भाव देखा है किसी ने? और दुनिया में क्या किसी समाज द्वारा उसी नदी को इतना गंदा किया जाना भी कभी सुना है?

असल में हम अपनी धरती, अपनी आत्मा और अपनी भाषा के हनन में जिस क्षण आनंद महसूस करने लगे, तभी से जो कुछ भी हमारा है, जिसने हमें सदियों से संभाले रखा वह सब खत्म होने लगा। हमें वोल्गा प्रिय हुई। हमने सहारा के रेगिस्तान पर लिखा। हमने थम्स और सीएन पर पढ़ा और सोचा। पर गंगा रही बौने, देहाती, अनपढ़, धार्मिक लोगों का मसला जो कुंभ में भीड़ बनते हैं। जो उनकी नहाते हुए या साधु की मोबाइल वाली फोटो खींचने जाते हैं, वे 'सभ्य सुसंस्कृत' गंगा कहां से समझेंगे?

अंग्रेजी में गंगा पढ़ेंगे तो भाव कहां से जगेगा? दफ्तर, अफसर, मीडिया, नेता सब अब गंगा को इश्तिहार बना बैठे हैं। दीवारों पर गंगा बचाओ लिखो, दीवारें गंदी करो, गंगा साफ होती नहीं। विपक्ष पर वार के लिए गंगा। प्रतिघात के लिए गंगा। भक्तों को मूर्ख बनाने के लिए गंगा। राजनीति पर तबीयत से चोट के लिए गंगा।

पर आचमन, स्नान और भारत के लिए गंगा अदृश्य होती जा रही है।

७-ई, स्वामी राम तीर्थ
नगर रानी झांसी रोड़
झण्डेवाला

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बंधित विवरण

फार्म –४ (नियम ८ देखिए)

१.प्रकाशन स्थल	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर नेरी
२.प्रकाशन तिथि	:	अप्रैल, जुलाई, अक्तूबर, जनवरी माह का प्रथम सप्ताह
३. मुद्रक का नाम	:	चेतराम
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हां
पता	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर नेरी गांव नेरी, डाकघर खगल, जिला हमीरपुर–१७७००१ हिमाचल प्रदेश।
४.प्रकाशक का नाम	:	चेतराम
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हां
पता	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर नेरी गांव नेरी, डाकघर खगल, जिला हमीरपुर–१७७००१ हिमाचल प्रदेश।
५.सम्पादक का नाम	:	डॉ० विद्या चन्द ठाकुर
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हां
पता	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर नेरी गांव नेरी, डाकघर खगल, जिला हमीरपुर–१७७००१ हिमाचल प्रदेश।
६.उन व्यक्तियों के नाम व पत्ते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के सांझेदार या हिस्सेदार हों।	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर नेरी गांव नेरी, डाकघर खगल, जिला हमीरपुर–१७७००१ हिमाचल प्रदेश।

मैं चेतराम प्रकाशक एवं मुद्रक इतिहास दिवाकर एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य हैं।

हस्ता/–
चेतराम
प्रकाशक

शुभ कामनाओं सहित :

अनिला महाजन

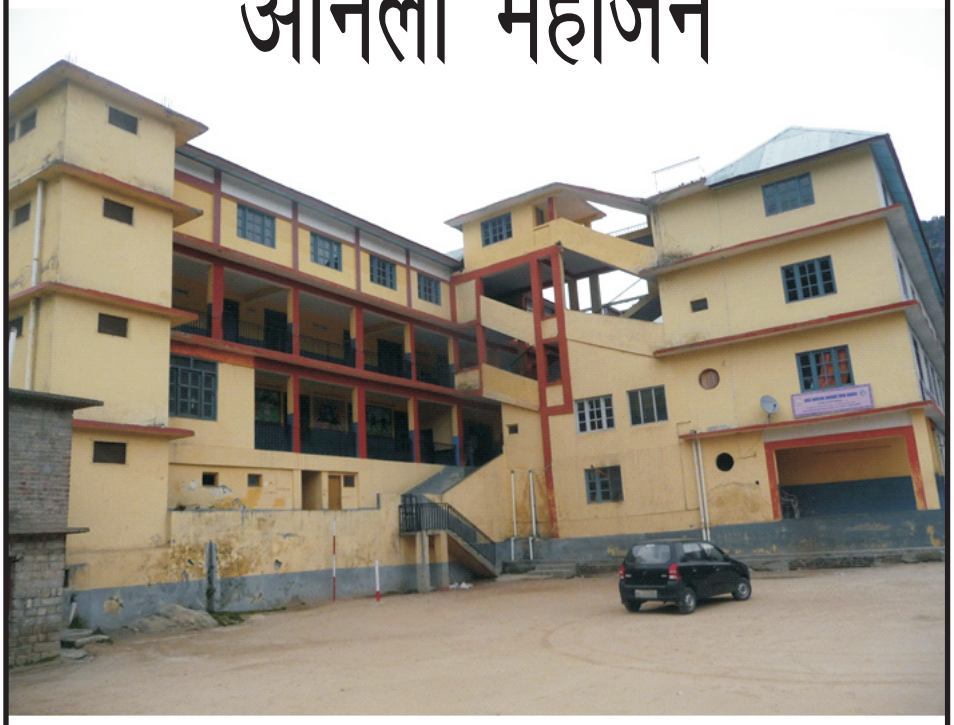

सरस्वती विद्या मन्दिर
वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
मनाली, जिला कुल्लू (हि०प्र०)